Scanned by CamScanner

गुरुधाम

३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा

नई दिल्ली–११००३४

(टेलीफोन-७१८२२४८)

जैसा कि आपको ज्ञात ही है कि सिद्धाश्रम साधक परिवार के सदस्यों की सुविधा के लिए दिल्ली में भी गुरुधाम की स्थापना की गई है, और यहां पर भी कार्यक्रम नियमित रूप से संचालित होने लगे हैं, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश आदि के साधक अपनी सुविधा से इस स्थान पर आकर अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकते हैं, और जो कार्यक्रम संचालित होते हैं उनमें भाग ले सकते हैं।

प्रत्येक गुरुवार को गुरु पूजन

प्रत्येक गुरुवार (वीरवार) को शाम को ४ से ७ बजे के बीच गुरु पूजन, गुरु आरती, ध्यान-योग प्रक्रिया आदि कार्यक्रम संचालित होते हैं, आस-पास के रहने वाले साधक और विशेष रूप से दिल्ली के साधकों का तो कर्त्तव्य है, कि वे इस स्थान पर एकत्र हो कर गुरु पूजन में भाग लें, फरवरी महीने में ६-२-९२, १३-२-९२, २०-२-९२ और २७-२-९२ को गुरुवार है, इन दिनों शाम को इस प्रकार के कार्यक्रम सम्पन्न होंगे।

सोमवती अमावस्या

३-२-९२ को सोमवती अमावस्या है, इस दिन यहां पर पूर्वजन्मकृत दोष निवारण प्रयोग सम्पन्न होगा, जो कि शाम को ४ से ६ बजे के बीच में होगा, इससे पिछले जीवन के समस्त दोषों का शमन प्रयोग सम्पन्न होगा, जिससे कि वर्तमान जीवन सभी दृष्टियों से सफल और सम्पन्न हो सके तथा हम उन दोषों से सर्वथा मुक्त हो सकें।

जिन साधकों को भी सुविधा हो वे यहां पर एकत्र हो कर इस कार्यक्रम में भाग ले सकते हैं।

वसन्त पंचमी

९-२-९२ को वसन्त पंचमी समारोह है, प्रत्येक साधक का कर्त्तव्य है कि वे इस अवसर पर एकत्र हों, साथ-साथ गुरु-चिन्तन, गुरु-पूजन कार्यक्रम सम्पन्न हो।

वर्ष–१२

अंक–१

जनवरी-१९९२

✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻

: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग,

हाईकोर्ट कालोनी,

जोधपुर–३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : ३२२०९

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

अहं चिन्त्यं मन: चिन्त्यं प्राण चिन्त्यं गुरौश्वर ।
सर्व सिद्धि प्रदातव्यं तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

मेरा शरीर और जीवन मात्र गुरु का ही स्मरण करता रहे, मेरा मन हर क्षण गुरु चरणों में लीन रहे, मेरे प्राण गुरु रूपी ईश्वर में अनुरक्त रहें, संसार में केवल गुरु ही हैं, जो मुझे समस्त प्रकार की सिद्धियां प्रदान कर सकते हैं, इसीलिए जीवन के प्रत्येक क्षण, मैं परम पूज्य गुरुदेव का स्मरण करता ही रहता हूं ।

चल उड़ जा रे पंछी

परम पूज्य गुरुदेव,

चरण कमलों में साष्टांग दंडवत् प्रणाम स्वीकार हो !

यह पत्र मैं अत्यन्त दुःख और वेदना के साथ लिख रहा हूं, मैंने कभी भी आपको पत्र लिखने की धृष्टता नहीं की, कभी भी ऊंचे स्वर में बोल कर अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं किया, पर अब मेरे मन में बहुत ज्यादा घुटन, बहुत ज्यादा तनाव और बहुत ज्यादा वेदना एकत्र हो गई है, और स्थिति यहां तक बन गई है कि या तो मैं पत्र लिखकर अपनी भावनाओं को आप तक पहुंचाऊं, अन्यथा यह मेरा शरीर फट कर रह जायेगा।

मैं देख रहा हूं कि पिछले छः महीनों से आप बहुत अधिक उदास और म्लान से प्रतीत हो रहे हैं, आपके चेहरे पर जो मुस्कराहट, जो खिलखिलाहट और निश्छलता दिखाई दे रही थी, उसकी कोई भी रेखा मैं अनुभव नहीं कर रहा हूं, मैं पिछले छः महीनों में लगभग पांच या छः बार आपसे मिला हूं और हर बार आपको ज्यादा संत्रस्त ज्यादा तनाव-युक्त और ज्यादा परेशान देखा है।

मुझे कोई हक नहीं है कि मैं आपके इस तनाव का रहस्य समझूं और फिर आप तो समस्त ब्रह्माण्ड में विचरण करने वाले योगीराज हैं, पृथ्वी लोक ही नहीं अन्य लोकों में भी आपकी गति सहज सामान्य है, मामूली चर्मचक्षुओं वाले स्वार्थी शिष्य इस रहस्य को समझें या न समझें, आपके व्यक्तित्व को पहिचाने या न पहिचाने, परन्तु मैं तो कई वर्षों से आपके व्यक्तित्व का साक्षी रहा हूं, आपसे मैंने साधनाएं सीखी हैं, पितृवत स्नेह प्राप्त किया है, और बाल सुलभ हठ करके भगवे वस्त्र पहिने होते हुए भी इस स्वार्थमयी दुनियां में विचरण कर रहा हूं, स्वार्थ इतना ही कि मैं आपके आस-पास रहूं, आपको देखता रहूं, आपके मधुर शब्दों को सुनता रहूं और आपके शरीर का स्पर्श अनुभव करता रहूं।

और मैं सौभाग्यशाली हूं कि मुझे आपका प्यार, आपका स्नेह, और आपका अपनत्व अनुभव हुआ है, संन्यासी जीवन में मैंने कई साधनाएं सम्पन्न कीं, और उनमें सफलता प्राप्त की, पर आपकी आज्ञा से परे हटकर जब मैं आपके गृहस्थ जीवन में आपके पास आया तो मैं समझ रहा था कि आप नाराज हैं, मेरा इस प्रकार आना आपको अच्छा नहीं लगा था, आपने दो-तीन बार कटु शब्द भी मुझ से बोले, अवहेलना भी की, आपकी उपेक्षा को भी अनुभव किया, और घर से बाहर चले जाने और फिर कभी भी न मिलने का आदेश भी सुना।

परन्तु मेरा मन अन्तर्द्वन्द्व से ग्रस्त था, एक तरफ जीवन की सर्वोच्च साधना **'आपकी आज्ञा'** थी जिसका पालन करना मेरा परम कर्त्तव्य और ध्येय था, और दूसरी तरफ मेरा मन, मेरी आत्मा, मेरे शरीर का अणु-अणु, रोम-रोम था जो आपके पास रहना चाहता था, आपके चरण कमलों को निहारना चाहता था और आपके शरीर की सुगन्ध से आप्लावित होना चाहता था।

दोनों स्थितियों में से कोई एक स्थिति ही ग्राह्य हो सकती थी, परन्तु शंकराचार्य के शब्दों में "शिष्योत्हठं पूर्ण मदैव तुल्यं" शिष्य उस बालक की तरह होता है जो हठ कर सकता है, और हठ में विवेक-अविवेक नहीं रहता, निश्चय ही मैंने आपकी आज्ञा का उल्लंघन कर अविवेक किया है, परन्तु मेरा हठ मेरे ऊपर हावी रहा और मैं संन्यास जीवन को तो नहीं छोड़ सका परन्तु आपके आस-पास विचरण करता रहा, मंडोर में किसी स्थान पर साधना करता रहा, यदाकदा आपके चरण कमलों में आता रहा, उपेक्षा सहन करता रहा परन्तु आपकी उपेक्षा, आपकी झिड़कियां और आपका फटकारना भी मेरे लिए मूल्यवान था।
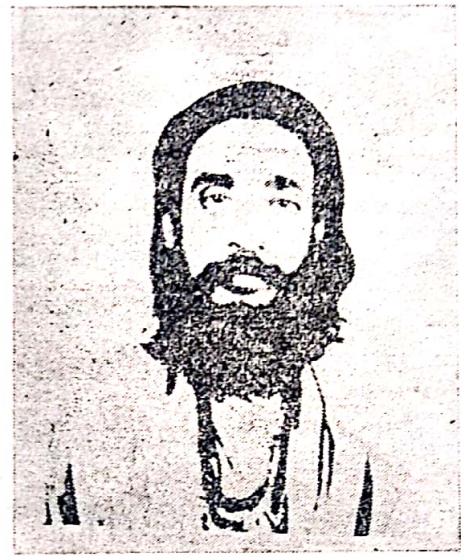
पर धीरे-धीरे आप परेशान, खिन्न, मलिन, और चिन्तित होते गये, और फिर पिछले छ: महीनों में तो मैंने यह अनुभव किया कि शायद आप बहुत ज्यादा व्यथित हैं, एक बार मैंने जब इस सम्बन्ध में पूछा कि आपका स्वास्थ्य धीरे-धीरे कमजोर होता जा रहा है, आपका वजन कम होता जा रहा है, आपके चेहरे पर एक उदासी सी अनुभव करने लगा हूं, तो आपने उस समय चुप रहने के बाद धीरे से उत्तर दिया था कि **"मैं अब ज्यादा समय यहां रहना नहीं चाहता, मैं वापिस सिद्धाश्रम जाना चाहता हूं और मैं एक दिन बिना किसी को कहे अकेला ही सिद्धाश्रम चला जाऊंगा।"**

और ये शब्द हथौड़े की तरह मेरे सिर पर लगे थे, इसलिए कि जरूर कोई बहुत बड़ा कारण होगा तब आपने ऐसा निर्णय लिया है, और यदि आप अकेले चुप-चाप बिना किसी को कहे, सिद्धाश्रम चले जायेंगे तो इस बगीचे का क्या होगा, जिसे **सिद्धाश्रम साधक परिवार** कहते हैं, इन छोटे-छोटे पुष्पों का क्या होगा, जो अभी-अभी खिलने लगे हैं, इन साधकों और शिष्यों का क्या होगा, जिन्होंने इस क्षेत्र में आंखें खोली हैं, साधनाओं का आनन्द लेने लगे हैं, एक अजीब सी खुमारी और मस्ती इनके जीवन में छाने लगी है, ये गुरु और उसके महत्व को पहिचानने लगे

लेखक : विज्ञानानन्द

हैं, क्या ये सब बेसहारा, अनाथ और अपाहिज से नहीं हो जायेंगे? क्या खिलने से पहले ही इन पर तूफान नहीं बरस जायेगा? क्या यह सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट नहीं हो जायेगा?

और मेरी आंखों के सामने घूम जाता है, **निर्मोही** का चेहरा, **गुरु सेवक श्रीवास्तव, डॉ० बनर्जी, सुकुमारी गीता, पहल, वशिष्ठ, अधिकारी, चौबे और सरला बहिन** का, इन लोगों ने क्या अपराध किया है? इन लोगों को किस बात की सजा मिल रही है? ये किसके भरोसे खड़े हो सकेंगे? ये किसको अपना गुरु कह सकेंगे? और ये ही नहीं हजारों-हजारों शिष्य किसको अपना गुरु कह कर सम्बोधित कर सकेंगे? हाथ उठा कर किसको प्रणाम कर सकेंगे? ये दौड़ कर किसके चरणों में अपने आपको समर्पित कर सकेंगे? इनका कौन होगा?

और आप सोचिये कि क्या आपके जाने के बाद ये दूसरा गुरु बना लेंगे? आप सोचिये कि क्या किसी और व्यक्ति के प्रति इनकी आस्था बन सकेगी? आप सोचिये कि क्या आगे के पूरे जीवन में इनके हृदय में मधुरता और आनन्द की अनुभूति हो सकेगी? ऐसा नहीं हो सकता, ऐसा हो भी नहीं सकेगा, और एक प्रकार से यह सब कुछ वीरान, उजाड़ और बरबाद सा हो जायेगा।

मैंने पिछली बार नवरात्रि के अवसर पर सम्पन्न साधना शिविर को देखा है, और मैंने देखा है आपके गिरते हुए स्वास्थ्य को, मैंने देखा है उन शिष्यों के भाव विह्वल चेहरों को, आंखों को, चीत्कार करती हुई ध्वनियों को, और जब सबने सुबकते हुए हाथ उठा कर ईश्वर से प्रार्थना की थी कि **"गुरुदेव की बीमारी हमें प्राप्त हो जाय"** तो सारा वातावरण बोझिल, उदास और अश्रुपूर्ण हो गया था, यह सब क्या था, यह पूरे भारतवर्ष में फैले हुए शिष्यों की अभिव्यक्ति थी, उनकी आंखों से निकलते हुए आंसुओं का अर्घ्य था, उनके मन की वेदना थी।

और फिर आपको बीमार कौन बना सकता है? जब आपसे पूछते हैं तो आप कहते है कि **"मैं तो बीमार हूं नहीं, मेरा शरीर अवश्य बीमार है, और यदि शरीर चला भी जायेगा तो अब कोई पछतावा नहीं है."** तो आप सोचें कि आपके ये शब्द तीर की तरह हमारे सीने में लगते हैं, हम तड़फ कर रह जाते हैं, हम मूक बन कर अहसास करने लग जाते हैं कि वास्तव में ही अगले क्षण क्या होगा ? क्या वास्तव में ही आप हमें छोड़ कर चले जाएंगे ? क्या वास्तव में ही हम अनाथ बन कर भटकने लगेंगे ? फिर कौन सा स्थान होगा, जहां हम अपना सिर झुकाएंगे, अपने घर की, अपने मन की वेदना को सुनायेंगे, फिर किस का मुस्कराता हुआ चेहरा देखेंगे, फिर कौन हमारे सिर पर हाथ फेरेगा, कौन हमें प्यार से डांटेगा, प्रवचनों में कौन हमें ज्ञान और साधना का विस्तार दे सकेगा, हमारे जीवन का सहारा कौन बन सकेगा ?

इस समय तो भारत वर्ष में कोई दिखाई नहीं देता, न आपके जैसी विद्वता है, न प्यार का समुद्र, न स्नेह की अधिकता, न मधुरता की परिपूर्णता, मैं तो पूरे भारतवर्ष में भटकता हूं, पर जितनी शीतलता, जितना सुखद स्पर्श आपसे प्राप्त हुआ है, वह अन्यत्र संभव नहीं।

और मैं जानता हूं कि आप पूर्ण सोलह कला पूर्ण व्यक्तित्व हैं, सिद्धाश्रम के प्राण हैं, भगवान श्री कृष्ण के प्रतिबिम्ब स्वरूप हैं, और जिस प्रकार वे बिना किसी को कहे अचानक चले गये थे, शायद आप भी उसी तरह अचानक एक दिन हमें छोड़ कर चले जाने को उद्यत हो रहे हैं, क्योंकि आपके शब्दों से, आपके विचारों से ऐसा ही झलकने लगा है।

आज पूरा शिष्य समुदाय व्याकुल है, परेशान है, बम्बई में जितने दिन आप रहे, सभी संत्रस्त और परेशान, आपको कहने की हिम्मत किसी की नहीं हो रही थी, पर सब की आंखों में आंसू झिलमिला रहे थे, सभी के मन में एक ही संकल्प था, कि हमारे प्राण, हमारी जिन्दगी भले ही पूज्य गुरुदेव ले लें, पर वे हमसे अलग न हों और जब पूरे भारतवर्ष के साधकों शिष्यों को यह पता चला कि आप अस्वस्थ हैं तो जितने टेलीग्राम, जितने पत्र आपको प्राप्त हुए, उससे उनकी कृतज्ञता, उनका स्नेह, उनका अपनत्व अनुभव हो रहा है।

क्या आप अपने कथन पर पुनर्विचार नहीं कर सकते ? क्या आप कायाकल्प कर अपने स्वास्थ्य को अनुकूल नहीं बना सकते ? आपको ऐसा करना ही होगा, क्योंकि यह आपके हजारों-लाखों शिष्यों की ध्वनि है, और आप स्वयं देखेंगे कि अगले एक महीने में हजारों-हजारों शिष्यों के पत्र आपको कायाकल्प करने के लिए बाध्य कर देंगे, हजारों शिष्य आपके पास पहुंच कर आपके विचारों में परिवर्तन लाने का प्रयास करेंगे, और मुझे विश्वास है कि प्रत्येक शिष्य किसी न किसी माध्यम से आपको सिद्धाश्रम जाने से रोकेगा ही, बाध्य करेगा ही, मजबूर करने के लिए दृढ़ संकल्प होगा ही।

और मैं फिर आंसुओं की कलम से यह पत्र लिख कर प्रार्थना कर रहा हूं, आप अभी ऐसा कदम न उठायें, कि जिससे हम गुरु विहीन हो कर अनाथ हो जांय, अन्धेरे में खो जांय। ●

अकिंचन

विज्ञानानन्द

सम्पादक की ओर से

प्रिय आत्मीय बन्धु,

परम पूज्य, कृपा सिन्धु, कल्पवृक्ष सदृश, योगीराज, परमहंस, परम तपस्वी, युग पुरुष, प्रातः स्मरणीय गुरुदेव स्वामी निखिलेश्वरानन्द, नारायण स्वरूप, ब्रह्म तेजस्वी **डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली** के सभी शिष्यों, साधकों, पाठकों को मेरा नमन प्रणाम एवं नव वर्ष की शुभकामनाएं।

नव वर्ष के इस सुप्रभात में पूज्य गुरुदेव की शक्ति किरणें आपके जीवन को आलोकित करें, आपका जीवन सुख-शान्ति, आनन्द, दिव्यता, सौभाग्य, श्री, यश से परिपूर्ण हो, ऐसी मैं अपने हृदय से कामना करता हूं।

पूज्य गुरुदेव द्वारा जाग्रत किया "मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान" रूपी शंख का जयघोष और आशीर्वाद हजारों-हजारों परिवारों में अपनी आभा फैला रहा है, ज्ञान का, चेतना का विस्तार हो रहा है, आप भी इसमें सहभागी हैं, और यह आपके जीवन का सर्वश्रेष्ठ अध्याय है।

नव वर्ष में यह प्रथम **तन्त्र विशेषांक** आपके सामने प्रस्तुत करते हुए इस क्षुद्र मन का यह विश्वास है, कि आपको यह अवश्य पसन्द आयेगा और आप अपने विचारों से अवश्य अवगत कराएंगे, पूज्य गुरुदेव के अमृत वचनों को हमने शब्दों के माध्यम से अंकित कर आपके सामने प्रस्तुत किया है, ये शब्द आपके जीवन में उच्च स्थिति, श्रेष्ठ स्थिति अवश्य लाएंगे, और आप इस ज्ञान को अपने भीतर आत्मसात कर इन सभी तन्त्र-प्रक्रियाओं का स्वरूप स्वयं अनुभव करेंगे, तो हमारा यह प्रयास सफल होगा।

तन्त्र विशेषांक के सम्बन्ध में कार्यालय को हजारों पत्र प्राप्त हुए, सुझाव प्राप्त हुए, इन सब विचारों को देखते हुए हमें पूज्य गुरुदेव से निवेदन कर जो अमृत वचन प्राप्त हुए, वे **'गागर में सागर'** के समान हैं, इसे आप स्वयं अनुभव करेंगे।

पूज्य गुरुदेव कहते हैं कि जीवन की तभी सार्थकता है, जब व्यक्ति का चिन्तन, उसके सभी प्रयास अपने जीवन को श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम बनाने की ओर क्रियाशील हों, वह अपने प्रत्येक क्षण के महत्व को समझे, हमारा भी आपसे यही निवेदन है, कि आप अपने भूतकाल को भूलते हुए जीवन में नये निर्माण की आधार शिला रखें, अपने भीतर की दिव्य शक्तियों को जाग्रत करें, एक शक्ति पुंज बन कर अपने कुल, परिवार का नाम रोशन करें और जीवन का वास्तविक आनन्द प्राप्त करें, आपकी यह पत्रिका, किस्से-कहानियां, चमत्कारिक वर्णन पढ़ने वालों के लिए नहीं है, यह पत्रिका तो संकल्प के धनी, नई चुनौतियों का सामना करने वाले, लीक से हट कर जीवन जीने को आतुर, आस्था और विश्वास से परिपूर्ण व्यक्तियों के लिए है, और आप उनमें से एक है, यह वास्तव में गर्व का विषय है।

आपका सहयोग जिस रूप से अब तक प्राप्त हुआ उसी रूप से आगे प्राप्त होता रहेगा, हर साधक, हर शिष्य कुछ नया कर दिखायेगा, इस ज्ञान का और अधिक विस्तार करेगा, इस जन चेतना आन्दोलन में अपने साथ और भी अधिक व्यक्तियों को ले कर चलेगा, अपने प्रयासों में वृद्धि करेगा, यह हमारा विश्वास है।

इसी विश्वास के साथ एक बार पुनः आपको कोटि-कोटि शुभकामनाएं प्रेषित कर रहा हूं। ★ —सं०

वसन्त पंचमी-विशेष आयोजन—(९-२-९२)

गुरु शक्ति पीठ, जोधपुर में **सरस्वती जयन्ती (वसन्त- पंचमी)** को एक विशेष आयोजन परम पूज्य गुरुदेव द्वारा साधकों, शिष्यों के लिए सम्पन्न किया जायेगा, इस विशेष आयोजन में प्रातः **'वाक् सिद्धि साधना'** सम्पन्न कराई जायेगी, सरस्वती साधना का विशेष प्रयोग होगा, जो कि अब तक प्रकाशित नहीं हुआ है।

इसके अतिरिक्त सायंकाल को 'पारिजातेश्वरी तांत्रोक्त साधना' पूज्य गुरुदेव स्वयं सम्पन्न करायेंगे, जीवन में हर कार्य में कठिनाई, बाधा, रुकावटें आना, और कोई भी कार्य सही रूप से सम्पन्न न होना भाग्यबाधा दोष है और इस भाग्य दोष-निवारण हेतु विशेष तान्त्रिक क्रिया सम्पन्न कराई जायेगी, पूरी रात्रि के इस प्रयोग में जो साधक सम्मिलित होना चाहें, वे पहले से पत्र लिख कर अपना स्थान अवश्य आरक्षित करवा लें। ★

महाशिवरात्रि महाकल्प — २ मार्च १९९२

सभी प्रकार की तान्त्रोक्त-मान्त्रोक्त साधनाओं के आधार भूत पुंज भगवान शिव ही हैं, और महाशिवरात्रि उनकी साधना सम्पन्न करने का सर्वोत्तम सिद्ध मुहूर्त दिवस है।

शिवरात्रि को कालरात्रि कहा गया है, और रात्रि में साधक साधना के माध्यम से वह शिव-शक्ति प्राप्त कर सकता है, जिससे वह काल पर विजयी हो सके, जीवन में प्रत्येक बाधा काल के समान ही है, शत्रु बाधा निवारण के अतिरिक्त अष्टादस सिद्धियों में से सबसे महत्वपूर्ण साधना **कामावसायिता** है, जिसके द्वारा जीवन की इच्छाओं की पूर्ति हो सकती है और साधक जो संकल्प ले कर, इच्छा ले कर साधना करता है, वह कार्य अवश्य सम्पन्न होता है यह महत्वपूर्ण साधना भी पूज्य गुरुदेव द्वारा अपने शिष्यों को पूर्ण रुद्राभिषेक प्रयोग सहित सम्पन्न कराई जायेगी।

साधना के इच्छुक साधक पत्र लिख कर पूर्ण जानकारी अवश्य प्राप्त करलें, जिन साधकों को पूज्य गुरुदेव स्वीकृति प्रदान करेंगे, वे ही साधक इस विशेष आयोजन में सम्मिलित हो सकेंगे। ●

प्रारम्भ कीजिए जीवन में नये भाग्य उत्सव – वसन्त उत्सव को इस वसन्त पंचमी से

भाग्य का लेखन ईश्वर के साथ-साथ मनुष्य के अपने हाथ में भी है और यदि सरस्वती की कृपा हो जाये तो साधक अपना भाग्य स्वयं लिख सकता है, अपने भाग्य को संवार सकता है, क्योंकि वसन्त पंचमी तो सरस्वती जयन्ती भी है, अतः इस अवसर पर प्रस्तुत है एक अनूठा तांत्रिक प्रयोग—

मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति उसका वचन है, आप जो बोलते हैं वे शब्द ही आपके सबसे बड़े अस्त्र-शस्त्र हैं, दूसरों को प्रभावित कर अपनी उचित कार्य सिद्धि वाणी के माध्यम से ही संभव है और जब यह वाणी शब्द बन कर आपके भीतर के कुण्डलिनी चक्र के जाग्रत सहस्रार से निकले तो साधक को जो सिद्धि प्राप्त होती है वह **वाक् सिद्धि** कहलाती है।

वरदान और शाप वाक् सिद्धि के ही स्वरूप हैं, इस वाणी में जो क्षमता है, वह न तो खरीदी जा सकती है और न किसी से प्राप्त की जा सकती है, यह तो अपने भीतर क्षमता उत्पन्न कर प्राप्त की जा सकती है, ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ संरचना मानव में कोई भेद नहीं है, शारीरिक रूप से सभी समान हैं, भेद केवल वाक् सिद्धि का ही है और यदि यह वाक् सिद्धि बचपन से ही जाग्रत होने लग जाये तो वह बालक निश्चय ही जीवन में उच्चतम शिखर पर अवश्य पहुंचता है।

वसन्त पंचमी

वसन्त पंचमी के दो मुख्य स्वरूप हैं, एक स्वरूप तो अपने जीवन में नया वसन्त प्रारम्भ करने का दिवस है अर्थात् अपनी भाग्य रेखा को मोड़ने का, अपने जीवन तन्त्र को अपने हाथ से लिखने का, नवीन निर्माण करने का सिद्ध दिवस है, आप क्या थे और अब क्या हैं, इस पर विचार कर पछताने की आवश्यकता नहीं है, विचार तो यह करना है कि अब क्या करना है और इस वसन्त पंचमी से, इस नये विचार को कार्य रूप देना ही है, ऐसा संकल्प ले कर आपको अपने लिए विशेष प्रयोग करना है—

पारिजातेश्वरी ब्रह्म शक्ति प्रयोग

वसन्त पंचमी के दिन प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठ कर स्नान कर शुद्ध सफेद धवल वस्त्र धारण करें और बिना

किसी ओर देखे सीधे अपने पूजा स्थान में जाएं, अपने सामने एक थाली में चन्दन से आठ बिन्दियां एक लाइन में लगाएं, प्रत्येक बिन्दी पर एक चावल की ढेरी बनाएं, प्रत्येक के आगे एक-एक दीपक जला दें, दीपक का मुंह आपकी ओर हो।

इससे पहले पूर्व रात्रि में तालाब अथवा सरोवर से लाई हुई गीली मिट्टी का एक बड़ा गोला बना दें और इस गोले के भीतर तांत्रोक्त सिद्ध **"पारिजातेश्वरी ब्रह्म शक्ति कंकण"** डाल दें, मिट्टी के गोले को कुंकुम, अबीर, गुलाल अर्पित कर पूर्ण रूप से रंगीन कर दें, तथा इस पर तीन अगरबत्ती लगाएं, थाली में जो आठ चावल की ढेरियां हैं, उन पर एक-एक सुपारी रख कर सात भाग्य देवियों— ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, महालक्ष्मी तथा चामुण्डा की स्थापना करें।

अब प्रत्येक ढेरी में से थोड़े-थोड़े चावल लें, और मिट्टी के गोले पर चढ़ा दें, फिर अपने दोनों हाथ इस ब्रह्म शक्ति गोलाकार पिण्ड पर रख कर निम्न मन्त्र का १०८ बार जप करें—

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं हं सं कं लं ह्रैं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः ॥

अब खड़े हो कर सारे चावल एक साथ एकत्र कर अपने हाथों से लेकर पहिले मस्तक से फिर नेत्रों के, फिर मुख के स्पर्श कराएं और उसी स्थान पर बैठ कर मिट्टी के पिण्ड को फोड़ कर **पारिजातेश्वरी ब्रह्म शक्ति कंकण** अपने हाथ में धारण कर लें तथा शेष सभी सामग्री शुद्ध सफेद कपड़े में बांध कर नदी, सरोवर, तालाब अथवा पीपल वृक्ष में अर्पित कर दें।

यह प्रयोग एक विशेष प्रकार का तांत्रिक प्रयोग है, और शास्त्रोक्त कथन है कि यह पूजा करने के पश्चात् धारण किये जाने वाले कंकण को किसी भी व्यक्ति को दान में अथवा भेंट में न दें इसे अपनी सबसे बड़ी सम्पत्ति मानते हुए उसे हर समय शरीर से स्पर्श कराये हुए रखें तो उसका भाग्य चक्र बदलने लगता है और शीघ्र ही भाग्योदय होता है।

बालकों के लिए सरस्वती सिद्धि

बालकों में बचपन से ही अच्छे संस्कार मिलें तथा श्रेष्ठ बुद्धि का विकास हो तो बालक जीवन में आगे चल कर विशेष सफलता प्राप्त करता है उसकी स्मरण शक्ति का विकास होना आवश्यक है और इसके लिए वसन्त पंचमी जो कि सरस्वती सिद्धि दिवस है, को निम्न प्रयोग सम्पन्न करना ही है—

वसन्त पंचमी के दिन साधक स्वयं स्नान कर सफेद धोती धारण कर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठ जांय और अपने सामने बालकों को बिठा दें, फिर **सरस्वती यन्त्र** को अपने सामने रख दें तथा उस पर "ह्रीं" अक्षर लिख दें और प्रत्येक यन्त्र पर अष्टगन्ध लगा कर निम्न मन्त्र की एक माला फेरें—

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं सरस्वत्यै नमः ॥

फिर उस यन्त्र के ऊपर से अष्टगन्ध उंगली से लेकर बालक की जीभ पर उंगली से या शलाका से **"ह्रीं सरस्वत्यै नमः"** लिख दें और वह यन्त्र किसी धागे में पिरो कर बालक के गले में पहना दें, यदि साधक स्वयं के लिए प्रयोग करे तो दर्पण में देख कर अष्टगन्ध से अपनी जीभ पर उपरोक्त मन्त्र लिख कर यह यन्त्र गले में धारण कर लें इस प्रकार घर के सभी बालक-बालिकाओं पर यह प्रयोग सम्पन्न करें, पर प्रत्येक के लिए अलग-अलग **सरस्वती यन्त्र** की आवश्यकता होती है।

समय रहते ही यन्त्र आप पत्रिका कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर ले लें, वसन्त पंचमी के पर्व पर इस प्रयोग को आजमा कर देखें, कि वास्तव में ही यह प्रयोग कितना अधिक चमत्कारिक और दिव्य है। ●

तंत्रस्य जीवनं धर्म
तंत्रं ही परिपूर्णता

किसी भी ज्ञान का आधार जन-जन में फैला उसका प्रचार होता है, तन्त्र विशाल एवं अद्भुत रहस्यमय विज्ञान है जिसके बारे में भ्रान्तियां ही अधिक फैली हुई हैं, आखिर तन्त्र क्या है ? इसमें क्या गोपनीयता है ?

किसी भी विज्ञान का आधार परिकल्पना व उससे निकला सिद्धान्त होता है और जब सिद्धान्त नियम बन जाय तो वह शुद्ध विज्ञान कहलाता है, आपके मस्तिष्क में कोई विचार आता है, उस विचार को तुलनात्मक रूप से देखते हुए उस विचार की पूर्ति हेतु गणनात्मक कार्य कर उस विचार को सत्य में बदल देते हैं, तो वह विज्ञान है ।

तन्त्र तो महाविज्ञान है, जिसमें हजारों सिद्धान्त हैं, यह तो जीवन की व्यवस्था है और यह अभ्यास तथा व्यावहारिक ज्ञान का शास्त्र है, तन्त्र द्वारा तो इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त ईश्वर की शक्तियों, जिन्हें देवता कहा जाता है, अपने अनुकूल बना कर उनकी शक्तियों को आकर्षित कर अपनी इच्छानुसार सिद्धि प्राप्त की जा सकती है, तन्त्र का उपासक अपने भीतर एक शक्ति को चुम्बक की तरह प्रभावशाली एवं तीव्र बनाता है, यह विज्ञान मानव शरीर के सूक्ष्म शरीर में स्थित चक्रों और यौगिक ग्रन्थियों को जाग्रत कर शक्तिशाली बनने की प्रक्रिया है, तन्त्र यह ज्ञान कराता है, कि मानव अपने भीतर की परतन्त्रता को छोड़ कर स्वतन्त्र बन सकता है,

अपनी शक्ति का असीम विस्तार कर सकता है, शरीर में रहते हुए भी शरीर से मुक्त हो कर अपने आपको विस्तार दे सकता है।

प्रकृति का हर तत्व एक-दूसरे से जुड़ा है, हर क्रिया के पीछे एक निश्चित आधार होता है, और उस क्रिया की प्रतिक्रिया अवश्य होती है, यह परमाणु प्रक्रिया अनवरत चलती रहती है, पानी का वाष्प बनना आकाश में धन और ऋण परमाणुओं का संगम हो कर बरसात होना, आंधी, तूफान, भूकम्प सब क्रियाएं एक-दूसरे से जुड़ी हैं, तन्त्र विज्ञान अपने भीतर एक विशेष शक्ति को जाग्रत कर देने की प्रक्रिया है, जिससे इस परमाणु व्यवस्था क्रम को अपने अनुसार ढाल सकते हैं और इसी को सिद्धि कहते हैं, सभी शक्तियों का प्रवाह वातावरण में हर समय चलता रहता है और जब आप की भीतर की शक्ति उस बाहरी शक्ति को वश में करने में समर्थ हो जायेगी तब आप अपनी इच्छानुसार कार्य सम्पन्न कर सकते हैं और यही तन्त्र विज्ञान है जहां साधक की इच्छा सर्वोपरि रहती है।

तन्त्र से भय क्यों ?

सामान्य व्यक्ति तन्त्र के सम्बन्ध में कैसी विचारधारा रखता है, यह बताने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि शक्ति के इस महाविज्ञान का दुरुपयोग ही अधिक हुआ है, जो तन्त्र शास्त्र के वास्तविक जानकार हैं, वे तो इस ज्ञान को अपने भीतर की शक्ति को जाग्रत कर ज्ञान मार्ग का विकास कर अपने भीतर के चक्रों को जाग्रत कर अपना आत्म साक्षात्कार कर अपने आपको जीवन-मुक्त कर परम-आनन्द की स्थिति में पहुंच जाते हैं, जब कि इस विज्ञान को पूरी तरह न समझने वाले और इसके केवल वाम मार्ग की ओर ध्यान देने वाले तांत्रिकों द्वारा इसका उपयोग दूसरों को पीड़ा पहुंचाना, शारीरिक आनन्द लेने तथा इसकी भ्रम विधियों के विकास में ही किया गया, इस कारण शक्ति का जागरण गलत प्रकार से हुआ जिससे वे

तन्त्र के दो मार्ग हैं—एक दक्षिण मार्ग और दूसरा वाम मार्ग, दक्षिण मार्ग में तन्त्र द्वारा अपने भीतर की शक्तियों का विकास कर ईश्वरीय सत्ता के साथ अपने आपको मिलाना और जीवन को पूर्ण रूप से मुक्त करना है, जब कि वाम मार्ग में शक्ति का सांसारिक हर्षपूर्ण उपयोग करना है।

दूसरों को तो पीड़ा थोड़ी बहुत पहुंचा सके, लेकिन अन्त में उनको भी बहुत अधिक पीड़ा होती है और ऐसे तांत्रिकों का जीवन बहुत खराब होता है।

व्यक्ति का चिन्तन हमेशा अच्छे पक्ष के बजाय बुरे पक्ष की ओर पहले जाता है और यह चिन्तन जो श्रेष्ठ भाव से नहीं किया होता है, उन्हें लाभ के स्थान पर हानि देता है, जैसा कि मैंने ऊपर लिखा तन्त्र अदृश्य लोक की चेतना ग्रन्थियों को जाग्रत कर उन्हें अपने अनुकूल बनाना है, इस प्रक्रिया में जब यह शक्तियां जाग्रत होती हैं तो सबसे पहले वे इन्हें जाग्रत करने वाले व्यक्ति पर प्रभाव डालती हैं, उस समय यदि साधक भयग्रस्त नहीं होता है तो ये शक्तियां साधक के वश में हो जाती हैं और उसका सभी कार्य कर सकती हैं, यदि आप शीत ऋतु में बर्फीली हवा में बाहर जाएंगे और यदि आप पूरे गर्म वस्त्र नहीं पहिने होंगे तो क्या होगा ? शीत कण आपके भीतर की प्रक्रिया को अव्यवस्थित कर देंगे, और आप बीमार हो जाएंगे, लेकिन यदि आप पूरी तरह से तैयार हैं, शरीर स्वस्थ है, पूरे गर्म कपड़े पहिने हुए हैं, सिर, कान, ढके हैं तो क्या होगा ? शीत कण कोई प्रभाव नहीं डाल पाएंगे और आप बिना भय के आगे बढ़ते रहेंगे, यही स्थिति तन्त्र की भी है, यदि आप भय रहित हैं, आपके पास साधन पूरे हैं, आपको प्रक्रिया का ज्ञान है, तो यह निश्चित है कि तन्त्र से अधिक सरल शक्ति विकास का कोई विज्ञान नहीं है।

तन्त्र में पूर्ण विजय प्राप्त करने के लिए स्वयं भय रहित होना आवश्यक है, आत्म शक्ति को उच्चतम बनाना

वास्तवित तन्त्र विज्ञान तो श्रेष्ठ गुरुओं द्वारा अपने शिष्यों को मौखिक तौर पर बताया गया, गुरुओं ने अपने शिष्य को इसका अभ्यास करा कर उसे सिद्धि से साक्षात् करा कर यह वचन प्राप्त करे कि आगे तुम इस ज्ञान को किसी योग्य व्यक्ति को ही दोगे, इसके पीछे मूल भावना उनकी शुद्ध रही, जैसा कि ऊपर मैंने लिखा कि प्रत्येक क्रिया की एक प्रतिक्रिया अवश्य होती है, यदि आप किसी को छेड़ोगे, चाहे वह रास्ते में बैठा कुत्ता हो, सांड़ हो अथवा सांप या शेर वह पलट कर कुछ आक्रमण अवश्य करेगा, तो आपमें इतनी शक्ति होना चाहिए कि आप उसे अपने वश में कर सकें, उससे लड़ कर अपने अनुकूल पालतू बना सकें, इसी प्रकार तन्त्र शक्ति की साधना है, और जब अविश्वासी, निर्बल, डरपोक, संदेही व्यक्ति साधना को प्रारम्भ कर थोड़ा भी संकट आने पर इसे छोड़ कर भाग जाता है, तो साधनात्मक क्रिया की प्रतिक्रिया साधक को हानि पहुंचा सकती है, उस समय साधक की शक्ति निर्बल होती है और बाह्य शक्तियां प्रबल होती हैं, इस कारण ही गुरु तन्त्र विद्या सिखाने का अधिकार अपने पास रखते हैं, वे शिष्य के सम्बन्ध में पूर्ण परीक्षण करते हैं और जब उन्हें यह ज्ञात हो जाता है, कि शिष्य इस प्रकार की शक्ति प्राप्त कर उसका दुरुपयोग नहीं करेगा तो वह उसे तन्त्र का ज्ञान देते हैं क्योंकि तन्त्र विद्या में सफलता मिलते ही साधक शक्तिशाली बन जाता है, उसकी शक्तियों का कार्य-आत्म कल्याण तथा जन

आवश्यक है, इसमें तो शक्ति का विकास करना है।

तन्त्र की गोपनीयता

वास्तविक तन्त्र विज्ञान को गोपनीय रखने के सम्बन्ध में हर प्रकार के शास्त्र में लिखा गया है, इसका क्या कारण है? यदि इस साधना का श्रेष्ठ उपयोग है तो हर जगह प्रचार होना चाहिए, हर व्यक्ति को ज्ञान होना चाहिए लेकिन ऐसा नहीं है, आखिर क्यों?

कल्याण होना चाहिए, न कि जन पीड़ा।

इसीलिए तन्त्र शास्त्रों में सारी विधियां आधी-अधूरी और प्रतीकात्मक रूप में लिखी रहती हैं और जो इस रूप में ही साधना करता है तो उसे सिद्धि कैसे मिल सकती है? पूर्ण ज्ञान तो योग्य गुरु के निर्देश में ही प्राप्त हो सकता है।

तन्त्र से भय

योग्य एवं बुद्धिमान व्यक्ति किसी भी कार्य के प्रति अपनी धारणा स्वयं देख कर, परख कर, बनाते हैं न कि जैसा कह दिया उसके अनुसार, तन्त्र में जब वाम मार्ग ज्यादा प्रचलित हो गया और जो लोग केवल गलत उद्देश्यों हेतु तन्त्र साधना करना चाहते थे और जब उन्हें सफलता नहीं मिली तो वे लोग ही तन्त्र के सबसे बड़े आलोचक बन गये और उन्होंने इस सम्बन्ध में भ्रान्तियां फैलाईं।

इसके अतिरिक्त अंग्रेजी शिक्षा और उससे पहिले मुगलकालीन संस्कृति ने भारतीय जन जीवन के आधार-भूत तत्व पूजा, मन्त्र, तन्त्र पर सबसे अधिक प्रहार किया, क्योंकि उन्हें यह ज्ञात हो गया था कि वेद, उपनिषद, मन्त्र की इस महान विद्या के कारण ही भारतीय सस्कृति अपने उच्च रूप में है, अतः यदि सामान्य जन जीवन में इन सबके विरुद्ध भ्रान्ति फैला दी जाय तो ये लोग अपने आप गुलाम बन जाएंगे, याद रखें कि गुलामी शारीरिक नहीं अपितु मानसिक विशेष खतरनाक होती है और इसी मानसिक गुलामी ने हमें उन्नति के शिखर से पतन की ओर ढकेला है।

"**मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान**" का यही उद्देश्य है कि इन सभी विद्याओं का विशेष ज्ञान जन जीवन की भाषा में प्रस्तुत किया जाय, लोग स्वयं इसका परीक्षण करें इसके अनुसार कार्य कर फल प्राप्ति करें, तभी इन विद्याओं का विकास हो सकेगा, हम अपनी मानसिक गुलामी से मुक्त हो सकेंगे, अपने आत्म सम्मान और आत्म शक्ति को पुनः प्राप्त कर सकेंगे।

तन्त्र मार्ग में- १-इन्द्राणी, २-वैष्णवी, ३-ब्रह्माणी, ४-कौमारी, ५-नारसिंही, ६-वाराही, ७-माहेश्वरी, ८-भैरवी, ९-चण्डी, १०-आग्नेयी इन दस नामों से दस महाविद्याओं की साधना की जाती है।

तन्त्र का वास्तविक लाभ

जैसा कि मैंने स्पष्ट किया तन्त्र तो शक्ति का स्रोत है, और इस विज्ञान में सिद्धि प्राप्त कर भौतिक बाधाओं से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है, इसके द्वारा दूसरों को प्रभावित किया जा सकता है, उनकी गतिविधियों को अपनी इच्छानुसार मोड़ा जा सकता है, अनिष्ट ग्रह, भूत-प्रेत बाधा, नजर इत्यादि का उपचार तन्त्र द्वारा सरल रूप में किया जा सकता है, मानसिक तनाव, असहनीय-वेदना तथा अन्य शारीरिक अव्यवस्था के निराकरण में तन्त्र विशेष सहायक होता है, तन्त्र के क्षेत्र में तो वशी-करण, मारण, उच्चाटन, सम्मोहन, दृष्टिबन्द, प्रेत-विद्या, अदृश्य वस्तुओं को देखना, भविष्य ज्ञान, आकर्षण, मोहन, शत्रुघात-प्रतिघात आदि क्रियाएं सम्मिलित हैं।

वास्तविक रूप से तन्त्र आत्म कल्याण का मार्ग है जिससे जीवन से सम्बन्धित और जीवन से परे सभी विषय सम्मिलित हैं, ईश्वर द्वारा प्रदत्त जीवन उपहार को श्रेष्ठ रूप से अपने भीतर सृजनात्मक शक्ति का जागरण कर, इन शक्तियों का उपयोग कर कर्म को प्रधानता देते हुए, अपने जीवन का पूरा-पूरा उपयोग करना है, इसी में मनुष्य के जीवन की सार्थकता है, सफलता है। ●

तांत्रोक्त गुरु साधना

तन्त्र साधनाओं में गुरु को आधार माना गया है, गुरु ही शिष्य को तन्त्र का पूरा ज्ञान करा सकता है, उसका प्रायोगिक ज्ञान दे सकता है, जिससे शिष्य अपने मार्ग में कहीं भटक न जाए और लाभ के स्थान पर अपनी हानि नहीं कर बैठे।

अतः तन्त्र साधना में इच्छुक साधक को कम से कम महीने में एक बार अपने स्थान पर गुरु का तान्त्रोक्त पूजन अवश्य करना चाहिए साधनाएं तन्त्र की हैं अतः पूजन भी पूर्ण तान्त्रोक्त विधि से सम्पन्न होना चाहिए।

समस्त साधनाओं का प्रारम्भ और समापन गुरु से ही होता है, भारतवर्ष ही नहीं अपितु विश्व के सभी मार्गों एवं सम्प्रदायों में गुरु का पद सर्वोच्च रूप से स्वीकार किया गया है, यों तो सभी ग्रन्थों में गुरु को प्रमुखता दी गई है, परन्तु तन्त्र में तो गुरु को समस्त महाविद्या साधनाओं एवं अन्य देव-साधनाओं में सर्वोच्चता प्रदान की गई है, उन्हें भगवान शिव का साक्षात् स्वरूप माना गया है।

ॐ संविद्रुपाय शान्ताय शंभवे सर्वसाक्षिणे।
सोमनाथाय महते शिवाय गुरुवे नमः॥

"यामल तन्त्र" में गुरु, देवता और मन्त्र में कोई भेद नहीं माना गया है—

गुरुरेकः शिवः प्रोक्तः सोऽहं देवि न संशयः।
गुरुस्त्वमपि देवेशि! मन्त्रोऽपि गुरुरुच्यते॥ अतो मन्त्रे गुरौ देवे, न हि भेदः प्रजायते॥

देवता-गुरु मन्त्राणामैक्यं, सम्भावनन् धिया।
तदा सिद्धा भवेन्मन्त्रः॥

"मुण्ड माला तन्त्र" में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि जो साधक गुरु, देवता और मन्त्र में भेद नहीं समझता तथा इन तीनों को परस्पर एक दूसरे का पूरक समझता है वही जीवन में पूर्ण सिद्ध साधक बन सकता है।

मन्त्रे वा गुरु-देवे वा न भेदं यस्तु कल्पते।
तस्य तुष्टा जगद्धात्री, किन्न दद्याद् दिने-दिस॥

भगवान शिव ने स्वयं कहा है, कि 'हे देवी! गुरु ही एक मात्र शिव कहे गये हैं और मैं वही हूं, इसमें कोई संदेह नहीं, तुम जगत जननी अम्बिका स्वरूपा हो और तुम भी गुरु, मन्त्र और दुर्गा हो, अतः मन्त्र गुरु और देवता में कोई भेद नहीं होता, इन तीनों की एकता भावना बुद्धि द्वारा करते रहने से ही मन्त्र सिद्ध होता है, जो साधक मन्त्र, गुरु और देवता में कोई भेद नहीं करता, उस पर

जगदम्बा प्रसन्न होकर सब कुछ दे देती है।"

यही नहीं अपितु "सुन्दरी तापिनी तांत्रिक ग्रन्थ" में स्पष्ट कहा गया है—

यथा घटश्च कलशः कुम्भश्चैकार्थ-वाचका।
तथा देवे मन्त्रो च गुरुश्चैकार्थ-वाचका॥

अर्थात् जिस प्रकार घट, कलश और कुम्भ तीनों का एक ही अर्थ होता है, उसी प्रकार मन्त्र देवता और गुरु तीनों एक ही अर्थ वाले हैं।

कुण्डलिनी के मूलाधारादि षटचक्रों में सर्वोपरि स्थान श्री गुरुदेव का ही नियत किया गया है, अधोमुख सहस्र-दल-पद्म-कर्णिकान्तर्गत मृणाल रूपी चित्रिणी नाड़ी से भूषित गुरु मन्त्रात्मक द्वादश-वर्ण (ह स ख फ्रें ह स क्ष म ल व र य) रूपी द्वादश दल पद्म में अ-क-थ आदि त्रिरेखा और ह-ल-क्ष कोण से भूषित कामकला, त्रिकोण में नाद बिन्दु रूपी मणि पीठ अथवा हंस-पीठ पर शिव स्वरूप श्री गुरुदेव का स्थान है।

"पादुका तन्त्र" में गुरु को शिव और शक्ति का समन्वय स्वरूप माना है, और महर्षि ने गुरु का ध्यान इस प्रकार बताया है—

"निज-शिरसि श्वेत-वर्ण सहस्र-दल-कमल-कर्णिकान्तर्गत-चन्द्रमण्डलोपरि स्व-गुरुं शुक्ल-वर्णं शुक्लालंकार-भूषितं ज्ञानानन्द-मुदित-मानसं सच्चिदानन्द-विग्रहं चतुर्भुजं ज्ञान-मुद्रा-पुस्तक-वराभय-कर त्रिनयनं प्रसन्न-वदनेक्षणं सर्वं देव-देवं वामांग वाम-हस्त-धृत-लीला कमलया रक्त-वसना-भरणाया स्व-प्रियया दक्ष-भुजेनालिंगतं परम-शिव-स्वरूपं शान्तं सुप्रसन्नं ध्यात्वा तच्चरण-कमल-युगल-विगलदमृत-धारया स्वात्मानं प्लुतं विभाव्य मानसोपचारैराराध्यै" ॥

जो साधना में पूर्णता चाहते हैं, जो सही अर्थों में सिद्ध योगी बनने की इच्छा रखते हैं, जो सम्पूर्ण प्रकृति को अपने अनुकूल बनाने की भावना रखते हैं, उनके लिए तन्त्र मार्ग ही श्रेष्ठ है, और तन्त्र में गुरु पूजा अत्यावश्यक मानी गई है, "काली विलास तन्त्र" में स्पष्ट रूप से बताया गया है—

गुरु-पूजां विना देवि, स्वेष्ट-पूजां करोति यः।
मन्त्रस्य तस्य तेजांसि हरते भैरवः स्वयम्॥
पूजा-काले च चार्वंगि आगच्छेच्छिष्यमन्दिरम्।
गुरुर्वा गुरुपुत्रो वा पत्नी वा वर-वर्णिनि॥
तदा पूजां परित्यज्य पूजयेत् स्वगुरुं प्रिये।
देवता-पूजनार्थं यद् गन्ध-पुष्पादिकं चयत्॥
तत्सर्वं गुरुवे दद्यात् पूजयेन्नग-नन्दिनि।
तदैव सहसा देवि! देवता-प्रीतिमाप्नुयात्॥

अर्थात् हे देवी! जो बिना गुरु पूजा किये अपने इष्ट या देवता का पूजन करता है, उसके मन्त्र का तेज भैरव हर लेते हैं, हे प्रिये! यदि इष्ट पूजन के समय में भी श्री गुरुदेव, गुरु-पुत्र या गुरु-पत्नी शिष्य के घर आ जावें तो तत्काल इष्ट पूजन अथवा साधना क्रम उसी क्षण बीच में ही छोड़ कर गुरुदेव की पूजा करें, देवता की पूजा के लिए जो भी सामग्री शास्त्रों में बताई गई है, उसी से गुरुदेव की पूजा करनी चाहिए और ऐसा करने पर ही इष्ट एवं देवता प्रसन्न होते हैं।

इस साधना में आगे जो सामग्री का विवरण आता है, उसकी व्यवस्था साधक पहले कर ले—जल पात्र, गंगाजल, चन्दन, कुंकुम, केसर, अष्टगन्ध, अक्षत, पुष्प, बिल्व पत्र, दीप, मुख्य हैं, गुरु पूजा में अपने पूजा स्थान में हर समय गुरु चित्र अथवा मूर्ति अवश्य स्थापित करें, पूजा में **गुरु यन्त्र, षटचक्र, कुण्डलिनी जागरण यन्त्र, पच्चीस गुरु प्रसाद फल** आवश्यक हैं, इनकी व्यवस्था भी कर लें।

अब नीचे दिये गये क्रमानुसार पूजा सम्पन्न करें, आवाहन के पश्चात् गुरुदेव को अपने शरीर के षटचक्रों में स्थापित करते समय कुण्डलिनी यन्त्र का पूजन करें।

तान्त्रोक्त विधि सबसे महत्वपूर्ण एवं एक विशेष क्रम से की जाने वाली विधि है, इस विधि में किसी प्रकार की

सूक्ष्मता नहीं की जा सकती है, पूर्ण शास्त्रीय विधान आवश्यक है, सर्वप्रथम अपने सामने पूजा स्थान में एक अलग खण्ड बना लेना चाहिए जिसमें गुरु पूजा की सभी सामग्री रखी जा सके इस विशेष तांत्रोक्त सामग्री का बार-बार स्थान बदला नहीं किया जा सकता।

इस विशेष स्थान, जो विशेष ताक (आला या खण्ड) हो सकता है, पूरे स्थान पर पीला वस्त्र बिछा दें इसकी दीवारों पर पीला वस्त्र अथवा कागज लगा दें, साधक-साधिका के वस्त्र भी पीले हों, पूर्व दिशा को मुंह कर सम्पूर्ण पूजन करना है।

सर्वप्रथम तांत्रोक्त गुरु यन्त्र **स्थापित करें,** गुरु चित्र फ्रेम में **मढ़वाकर लगा दें, गुरु के आगे** षटचक्र कुण्डलिनी जागरण यन्त्र **स्थापित करें, इस यन्त्र के नीचे अष्ट गन्ध से अपना नाम अवश्य लिख दें, अब गुरु ध्यान कर जिस क्रम में मन्त्र और सामग्री दी गई हैं, उसी क्रम में पूजा करें।**

गुरु ध्यान

द्विदल कमल मध्ये बद्धसंवित्समुद्रं।
धृतशिवमयगात्रं साधकानुग्रहार्थम्॥
श्रुतिशिरसिविभान्तं बोधमार्तण्डमूर्ति।
शमिततिमिरशोकं श्रीगुरूं भावयामि॥
हृदंबुजे-कर्णिकमध्यसंस्थं सिंहासने संस्थितदिव्यमूर्ति।
ध्यायेद्गुरुं चन्द्रशिलाप्रकाशं चित्पुस्तकाभीष्टवरं-दधानम्॥

आवाहन

ॐ स्वरूपनिरूपण हेतवे श्री गुरवे नमः।
ॐ स्वच्छप्रकाश-विमर्श-हेतवे श्रीपरमगुरवे नमः।
ॐ स्वात्माराम पंजरविलीन-तेजसे श्री परमेष्टि गुरवे नमः, आवाहयामि पूजयामि॥

षोडशी क्रम के अनुसार आवाहन के बाद गुरुदेव को अपने शरीर के षट चक्रों में स्थापित करें।

श्री शिवानन्दनाथ परा-शक्त्यम्बा मूलाधारे स्थापयामि
श्री सदाशिवानंदनाथ चिच्छक्त्यम्बा स्वाधिष्ठान चक्रे स्थापयामि
श्री ईश्वरानंदनाथ आनन्द शक्त्यम्बा मणिपुर चक्रे स्थापयामि
श्री रुद्र-देवानंदनाथ इच्छा शक्त्यम्बा अनाहत चक्रे स्थापयामि
श्री विष्णु-देवानंदनाथ ज्ञान-शक्त्यम्बा विशुद्ध चक्रे स्थापयामि
श्री ब्रह्म-देवानंदनाथ क्रिया-शक्त्यम्बा सहस्रार चक्रे स्थापयामि

चन्दन अक्षत

निम्न नौ 'सिद्धोध' का उच्चारण करते हुए, गुरु के चरणों पर चन्दन अक्षत सर्मपित करें।

ॐ उन्मनाकाशानन्दनाथ-जलं समर्पयामि
श्री समनाकाशानंदनाथ-गंगाजलं स्नानं समर्पयामि
व्यापकानन्दनाथ-सिद्धयोगा जलं समर्पयामि
शक्त्याकाशानन्दनाथ-चन्दनं समर्पयामि
ध्वन्याकाशानन्दनाथ-कुंकुम समर्पयामि
ध्वनिमात्राकाशानन्दनाथ-केसरं समर्पयामि
अनाहताकाशानन्दनाथ-अष्टगन्धं समर्पयामि
बिन्द्वाकाशानन्दनाथ-अक्षतं समर्पयामि
द्वन्द्वाकाशानन्दनाथ-सर्वोपचारार्थे समर्पयामि

पुष्प-बिल्व पत्र

अब गुरु यन्त्र, गुरु चित्र, एवं षटचक्र जागरण यन्त्र पर पुष्प पर एवं बिल्व पत्र अर्पित करें।

दीप

श्री महादर्पनाम्बा सिद्ध ज्योति समर्पयामि
श्री सुन्दर्यम्बा सिद्ध प्रकाशं समर्पयामि
श्री करालाम्बिका सिद्ध दीपं समर्पयामि
श्री त्रिबाणाम्बा सिद्ध ज्ञान दीपं समर्पयामि
श्री भीमाम्बा सिद्ध हृदय दीपं समर्पयामि

श्री करालयाम्बा सिद्ध सिद्ध दीपं समर्पयामि
श्री खराननाम्त्रा सिद्ध तिमिरनाश दीपं समर्पयामि
श्री विधीशालीनाम्बा पूर्ण दीपं समर्पयामि
श्री सोममण्डल नीराजनं समर्पयामि

नीराजन

इसके बाद ताम्र पात्र में जल, कुंकुम, अक्षत एवं पुष्प लेकर गुरु चरणों में समर्पित करें—

श्री सूर्यमण्डल नीराजनं समर्पयामि
श्री अग्निमण्डल नीराजनं समर्पयामि
श्री ज्ञानमण्डल नीराजनं समर्पयामि
श्री ब्रह्ममण्डल नीराजनं समर्पयामि

तत्पश्चात् अपने दोनों हाथों में पुष्प ले कर निम्न **'पंच पंचिका'** उच्चारण करते हुए इन दिव्य महाविद्याओं की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करें—

१-पंच लक्ष्म्य :—१-श्री विद्या-लक्ष्म्यम्बा, २-श्री एकाक्षर-लक्ष्मी लक्ष्म्यम्बा, ३-श्री महालक्ष्मी-लक्ष्म्यम्बा, ४-श्री त्रिशक्ति-लक्ष्मी-लक्ष्म्यम्बा, ५-श्री सर्वसाम्राज्य-लक्ष्मी लक्ष्म्यम्बा।

२-पंच कोश :—१-श्री विद्या-कोशाम्बा, २-श्री पर-ज्योतिः-कोशाम्बा, ३-श्री परि-निष्फल-शाम्भवी-कोशाम्बा, ४-श्री अजपा-कोशाम्बा; ५-श्री मातृका कोशाम्बा।

३-पंच कल्पलता :—१-श्री विद्या कल्पलताम्बा, २-श्री त्वरिता कल्पलताम्बा, ३-श्री परि-जातेश्वरी कल्प-लताम्बा, ४-श्री त्रिपुटा कल्पलताम्बा, ५-श्री पंचबाणेश्वरी-कल्पलताम्बा।

४-पंच कामदुधा :— १-श्री विद्या-कामदुधाम्बा, २-श्री अमृतपीठेश्वरी कामदुधाम्बा, ३-श्री सुधांसू काम-दुधाम्बा, ४-श्री अमृतेश्वरि-कामदुधाम्बा, ५-श्री अन्नपूर्णा कामदुधाम्बा।

५-पंच रत्नविद्या :—१-श्री विद्या-रत्नाम्बा, २-श्री सिद्धलक्ष्मी-रत्नाम्बा, ३-श्री मातंगेश्वरी रत्नाम्बा, ४-श्री भुवनेश्वरी रत्नाम्बा, ५-श्री वाराही रत्नाम्बा।

उपरोक्त "पंच-पंचिका" विश्व की श्रेष्ठ साधनाएं हैं और इन साधनाओं की प्राप्ति के लिए ही गुरुदेव से प्रार्थना की जाती है इसमें प्रत्येक साधना का उच्चारण कर "प्राप्तिं प्रार्थयेत्" बोलना चाहिए, उदाहरण के लिए "पंच लक्ष्म्य" में पहली साधना "श्री विद्या लक्ष्म्यम्बा प्राप्तिं प्रार्थयेत्" उच्चारण करना चाहिए, इसी प्रकार से अन्य स्थान पर भी उच्चारण करते हुए हर बार 'गुरु प्रसाद फल' अर्पित करना आवश्यक है।

श्री मन्त्रालिनी

अन्त में तीन बार श्री मन्मालिनी का उच्चारण करना चाहिए, जिससे कि गुरुदेव की शक्ति, तेज और सम्पूर्ण साधनाएं पूर्णता के साथ प्राप्त हो सकें।

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हंसः सोऽहं गुरुदेवायै नमः।

अन्त में हाथ जोड़कर गुरुदेव की प्रार्थना स्तुति करें—

**लोक-वीरं महान्पूज्यं, सर्व-रक्षा-करं विभुम्।
शिष्य-हृदयानन्दं, शास्तारं प्रणमाम्यहम्॥ १॥
त्रि-पूज्यं विश्व-वन्द्यं विष्णु-शम्भोः प्रियं सुतम्।
क्षिप्र-प्रसाद-निरतं, शास्तारं प्रणमाम्यहम्॥ २॥
मत्त-मातंग-गमनं कारुण्यामृत-पूरितम्।
सर्व-विघ्न-हरं देवं, शास्तारं प्रणमाम्यहम्॥ ३॥
अस्मत्-कुलेश्वरं देवं, अस्मच्छत्रु-विनाशनम्।
अस्मादिष्ट-प्रदातारं शास्तारं प्रणमाम्यहम्॥ ४॥
यस्य धन्वन्तरिर्माता, पिता रुद्रो भिषक्-तमः।
तं शास्तामहं वन्दे, महा-वैद्यं दया-निधिम्॥ ५॥**

सम्पूर्ण पूजन के पश्चात् गुरु आरती सम्पन्न करें और समर्पण करें, कि "हे गुरुदेव! ये सब पूजन आपको ही समर्पित है अपनी कृपा बनाये रखें।"

आप, श्रेष्ठ साधक को महीने में कम से कम एक बार यह पूजन विधान अवश्य सम्पन्न करना चाहिए। ●

ब्रह्माण्ड की समस्त सिद्धियों की स्वामिनी

श्री ललिताम्बा सिद्धि

महायोगी सिद्ध **त्रिजटा अघोरी** के नाम से पूरा भारतवर्ष परिचित है, उनकी साधनाओं में नित्य नये प्रयोग होते रहते हैं और प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों का उनके पास अपूर्व खजाना है, जो कि अपने आप में सिद्ध, और तुरन्त प्रभाव उत्पन्न करने वाले मन्त्र, तन्त्र और साधनाएं हैं।

कई वर्षों से मेरे मन में **ललिताम्बा साधना** सिद्ध करने की भावना थी क्योंकि यह एक गोपनीय साधना है और अभी तक प्रकाश में नहीं आ सकी, यद्यपि कई तन्त्र ग्रन्थों में इस साधना की विवेचना की गई है और बताया गया है कि यह संसार की अद्वितीय साधना है।

नीचे मैं विभिन्न ग्रन्थों में इस साधना के बारे में जो कुछ लिखा गया है, उसे स्पष्ट कर रहा हूं —

१–"**गोरक्ष संहिता**" में बताया गया है कि ललिताम्बा साधना गोपनीय, महागोपनीय है, इस साधना को भूल करके भी अपने पुत्र या शिष्य को भी नहीं देना चाहिए।

२–"**शंकरभाष्य**" में कहा गया है कि ललिताम्बा सिद्ध करने के बाद साधक पूरे संसार में विजयी होता है और ललिताम्बा यन्त्र धारण करने के बाद वह जिस व्यक्ति से मिलता है, उस पर अपना प्रभाव डाल देता है और विजय प्राप्त करता है।

३–"**तन्त्रसार**" में बताया गया है कि सौभाग्यशाली साधक ही ललिताम्बा यन्त्र को प्राप्त कर सकते हैं, इसे सिद्ध करने पर उसके शत्रु स्वतः समाप्त हो जाते हैं, और जीवन में उसे किसी प्रकार का कोई भय नहीं रहता।

४–"**रसतन्त्र**" में बताया है कि ललिताम्बा साधना कायाकल्प साधना है, इसके मन्त्र जप से नपुंसक व्यक्ति भी पूर्ण यौवनमय एवं कामदेव के समान सुन्दर बन जाता है, यह बुढ़ापे को समाप्त कर पुनः यौवन प्रदान करने में समर्थ है ।

५–"**मन्त्र विज्ञान**" ग्रन्थ में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि एक तो ललिताम्बा यन्त्र और उससे सम्बन्धित मन्त्र गोपनीय और सर्वथा दुर्लभ है, पर यदि किसी को यह प्राप्त हो जाय तो उसे **शून्य सिद्धि** स्वतः प्राप्त हो जाती है, और साधना सिद्ध होने पर वह वायु में से कोई भी पदार्थ प्राप्त करने में सफल हो जाता है ।

६–"**विश्वामित्र संहिता**" में ललिताम्बा साधना की प्रशंसा करते हुए बताया गया है कि गुरु अपनी तेजस्विता से इस यन्त्र को सिद्ध कर अपने शिष्य को प्रदान करें, और जब शिष्य ऐसा यन्त्र धारण कर साधना सम्पन्न करता है तो साधक का तीसरा नेत्र खुल जाता है, और वह एक क्षण में किसी को भी भस्म करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है ।

७–"**व्यास समुच्चय**" ग्रन्थ में बताया गया है कि हजार काम छोड़ कर के भी साधक को ललिताम्बा साधना सम्पन्न करनी चाहिए, क्योंकि अन्य साधनाएं तो फिर भी प्राप्त हो सकती हैं पर यह साधना तो कई-कई जन्मों के पुण्यों से ही प्राप्त हो सकती है ।

इसके अलावा भी सैकड़ों ग्रन्थों में ललिताम्बा साधना के बारे में विवरण वर्णन मिलता है और सर्वत्र इसकी प्रशंसा ही की गई है, परन्तु किसी भी ग्रन्थ में इस साधना से सम्बन्धित विधि, ललिताम्बा यन्त्र निर्माण के बारे में कोई प्रामाणिक विधि प्राप्त नहीं हो पाती ।

ऐसी स्थिति में यह हमारा और हमारी पीढ़ी का सौभाग्य है कि त्रिजटा अघोरी जैसे महायोगी ने इस साधना रहस्य को ढूंढ निकाला, यन्त्र निर्माण करने और इसे सिद्ध करने की प्रक्रिया स्पष्ट की, और ललिताम्बा मन्त्र को प्रामाणिकता के साथ स्पष्ट किया ।

वास्तव में ही यह साधना दिव्य साधना है, एक तरफ जहां ललिताम्बा सिद्ध होने पर धन-धान्य की निरन्तर वर्षा होती रहती है, जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता, वहीं दूसरी ओर उसके शत्रु स्वतः समाप्त होते रहते हैं, और वह त्रिकालदर्शी बन जाता है, किसी के भूत भविष्य को जान लेना उसके लिए कठिन नहीं होता, ललिताम्बा की कृपा से उसका तीसरा नेत्र खुल जाता है और उसमें श्राप देने की और वरदान देने की अद्‌भुत क्षमता आ जाती है ।

साधना विधि

यह साधना केवल तीन दिनों की है और रात्रिकालीन साधना है, साधक अपने स्थान को जल से धो ले फिर पीला आसन बिछा ले और पीली धोती पहिन कर उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने '**ललिताम्बा महायन्त्र**' को स्थापित कर दे, जो पूर्णतः चैतन्य मन्त्र सिद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो ।

इसके बाद अगरबत्ती व दीपक लगा कर "**हकीक-माला**" से निम्न मन्त्र का २१ बार उच्चारण करे, इस प्रकार नित्य इस महायन्त्र के २१ पाठ करे और तीन दिन तक करे, तीसरे दिन मन्त्र जप सम्पन्न होने के बाद उस यन्त्र को धागे में पिरोकर गले में धारण कर ले या बांह पर बांध ले, ऐसा होने पर उस साधक को यह साधना सिद्ध हो जाती है ।

साधना सिद्ध होने के बाद ऊपर जो इस प्रयोग से लाभ बताये गये हैं, वे स्वतः होने लगते हैं और साधक कुछ ही दिनों में सिद्ध योगी बनने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।

सबसे पहले हाथ में जल ले कर संकल्प करे कि मैं अमुक गोत्र, अमुक नाम का साधक भगवती ललिताम्बा के प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहता हूं, साथ ही साथ सम्बन्धित सिद्धि भी प्राप्त करना चाहता हूं, इसके बाद गुरु पूजन करे और एक माला गुरु मन्त्र जप करे, और फिर निम्न मन्त्र के २१ पाठ करें—

ललिताम्बा मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंस: ॐ नमो भगवति, अक्षोभ्ये रुक्ष-कर्ण, राक्षसि, पक्ष-व्रणे, क्षपे, पिंगलाक्षि, अरुणे, क्षये लीले, लोले ललिते, लूते, लुलिने, लुम्बिके लंकेश्वरि लासे, विमले, हुताशिनि, विशालाक्षि, हुंकारे, वडवामुखि महा-रवे, महाक्रोड-

क्रोधिनि, खरास्ये, सर्वज्ञे, तरले, तारे, दृष्टि-हृष्टे, खग-कन्धरे सारसि, रस-संग्रहिणि, ताल जंघ, करंकिणि, मेघनादे, प्रचण्डोग्रे, काल-कर्णि, चैल-प्रदे, चम्पे, चम्पावति, प्रचम्पे, मलयान्तकि, पितृ-वक्त्रे, पिशाचाक्षि पिशुनि, लोलुपे, वानति, वानरि, वायु-विकृतास्ये, वागु-वेगे, वृहत्-कुक्षि-विकृते, रिश्य रूपिणि।

कामाकर्षिणि, बुद्धयाकर्षिणि, अहंकारा-कर्षिणि, शब्दाकर्षिणि, स्पर्शाकर्षिणि, रूपा-कर्षिणि, रसाकर्षिणि, गन्धाकर्षिणि, चित्ता-कर्षिणि, धैर्याकर्षिणि, स्मृत्याकर्षिणि, नामा-कर्षिणि, बीजाकर्षिणि, आत्माकर्षिणि, अनात्मा-कर्षिणि, अमृताकर्षिणि, शरीराकर्षिणि, गुप्त-योगिनीशि, बौद्धदर्शनांगि, सर्वाशा-पूरक-चक्र-स्वामिनि।

तन्त्र से तीव्र वशीकरण

अघोर कपाल नाथ से प्राप्त यह प्रयोग कठोर से कठोर हृदय वाले पुरुष, स्त्री को वश में करता ही है।

अमावस्या की रात को श्मशान से थोड़ी सी राख लाकर आसन के नीचे रख ले और दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर के **सिद्ध हकीक माला या सर्प अस्थियों की माला** से ५१ माला निम्न मन्त्र जप करें, तो सर्वथा विरोधी भी वशवर्ती बन जाता है।

मन्त्र

ॐ ऐं ऐं 'अमुक' वश्यमानाय मम
आज्ञा परिपालय ऐं ऐं फट्॥

"अमुक" के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम बोलें।

अनंग-कुसुमे, अनंग-मेखले, अनंग-मदने, अनंग मदनातुरे, अनंग-रेखे, अनंग-वेगिनि अनांगकुशे, अनंग-मालिनी, अति-गुप्त-योगिनीशि, रौद्र-दर्शनांगि, सर्व संक्षोभिणि-चक्र स्वामिनि, पूर्वाम्नायेशि सृष्टि-प्रदे ।

सर्व-सिद्धि-प्रदे, सर्व-सम्पत-प्रदे, सर्व प्रियंकरि सर्व-मंगल कारिणी सर्व-काम-प्रदे, सर्व दुःख विमोचनि, सर्व-मृत्यु-प्रशमनि, सर्व विघ्न-निवारण सर्वांगसुन्दरी, सर्व-सौभाग्य-दायिनी, कुल-कौल-योगिनीशि, सर्वार्थ-साधक-चक्र-सेवामिनी ।।

ऊपर लिखे मन्त्र में शक्ति का संग्रह है, इस सम्पूर्ण मन्त्र को तो पूर्ण भक्ति भाव से, श्रद्धा से, विनय से, महायन्त्र को स्थापित कर जप करे तो साधक को तीन दिन बाद ही प्रत्यक्ष फल मिलना प्रारम्भ हो जाता है ।

इसमें विशेष बात यह है कि यन्त्र "प्राण-संजीवन काल सिद्धि तन्त्र एवं मन्त्र" **से आपूरित होना आवश्यक है, ललिताम्बा देवी तो तन्त्र की आधार शक्ति कही गई है और वास्तव में तन्त्र से वही व्यक्ति अपने जीवन में परिवर्तन ला सकता है, जो अपने भीतर शक्ति समेटने की इच्छा रखता हो, दृढ़ भावना रखता हो तथा अपने आपको शक्ति सम्पन्न कर विशेष कार्य सम्पन्न करना चाहता हो ।**

सौन्दर्य की दुनिया में तन्त्र का चमत्कार

आयुर्वेद के समान ही तन्त्र भी इस क्षेत्र में अचूक है, जिससे आश्चर्यजनक सौन्दर्य प्राप्त किया जा सकता है ।

मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त **"सौन्दर्य गुटिका"** सामने रख कर शुक्रवार की रात **"सिद्ध स्फटिक माला"** से इक्कीस माला नीचे लिखा मन्त्र जप करें—

मन्त्र

ॐ रतिप्रियायै काम देवायै मम अंगे उपांगे प्रविश्य सुदर्शनाय फट् ।।

कोई भी स्त्री पुरुष इस आजमाये हुए सिद्ध प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है । ★

संसार की अद्वितीय सम्मोहन वशीकरण शक्ति सम्पन्न

पारद मुद्रिका

पारद रसराज है, पूर्ण वशीकरण युक्त पदार्थ है और वशीकरण का तात्पर्य है शक्ति को वश में कर उस शक्ति को अपने लिए उपयोग करना।

पारद मुद्रिका अपने भीतर अनोखे गुण समेटे है, इस वशीकरण शक्ति मुद्रिका का निर्माण, चैतन्य प्रक्रिया एक जटिल एवं श्रमसाध्य कार्य है।

पूज्य गुरुदेव की कृपा से केवल शिष्यों और साधकों के लिए पहली बार—

संसार में कुछ वस्तुएं ऐसी होती हैं, जो अपने आप में दुर्लभ और अलौकिक होती हैं, हो सकता है कि इन में से कुछ चीजें सहज सुलभ हों, परन्तु जब तक उनके उपयोग और उससे सम्बन्धित ज्ञान नहीं होता, तब तक उनके लाभ भी नहीं उठाये जा सकते।

हमारे प्राचीन ऋषियों ने इन दुर्लभ वस्तुओं की गणना करते हुए बताया है कि मात्र २६ पदार्थ ऐसे हैं जो दुर्लभ हैं, अद्वितीय हैं, परन्तु मानव जाति के लिए अत्यन्त उपयोगी और अद्वितीय प्रभावयुक्त हैं, **पारद गुटिका** का भी उसमें एक नाम है।

मनुष्य हमेशा से ही सम्मोहन-वशीकरण का ज्ञान प्राप्त करने या इसका उपयोग करने के चिन्तन में रहा है, प्राचीन काल से लेकर आज तक सम्मोहन-वशीकरण पर सैकड़ों ग्रन्थ लिखे गये हैं, और वर्तमान समय में तो स्थिति यह है कि सम्मोहन विज्ञान को पूर्ण विज्ञान का दर्जा दे दिया है, संसार का शायद ही कोई देश ऐसा होगा जो सम्मोहन विज्ञान का उपयोग न करता हो, सम्मोहन विज्ञान से सम्बन्धित सैकड़ों अकादमियां खुल गई हैं, जिसमें इनका विधिवत् ज्ञान और प्रशिक्षण दिया जाता है, अमेरिका जैसे उन्नत देश में सम्मोहन को मेडिकल साइन्स में प्रधान स्थान दिया है, और इसकी अनिवार्यता स्वीकार की गई है।

आज चिकित्सा के क्षेत्र में सम्मोहन का उपयोग किया जाता है इसके साथ ही साथ शत्रु के मन का भेद लेने के लिए, पत्नी के मन के विचारों को जानने के लिए, पति के गुप्त कार्यों को पहिचानने के लिए, व्यापार के पार्टनर की धूर्तता को पहले से ही ज्ञात करने के लिए, प्रेमी या प्रेमिका को अपने अनुकूल बनाने के लिए, गलत रास्ते पर जाने वाले बेटे या बेटी को सही रास्ते पर लाने के लिए, किसी अधिकारी को अपने अनुकूल बनाने के लिए, और कहीं पर अपना काम निकालने के लिए इस सम्मोहन विज्ञान या वशीकरण का उपयोग किया जाता है।

सम्मोहन वशीकरण क्या है ?

यह अपने आपमें एक महत्वपूर्ण ज्ञान है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन को ज्यादा सुखी, ज्यादा सम्पन्न बना सकता है, इसके माध्यम से मन की बातों को जाना जा सकता है, सम्मोहित करके शराबी व्यक्ति की शराब छुड़वाई जा सकती है, जिसको सिगरेट पीने की लत पड़ गई हो उसका यह दोष दूर किया जा सकता है, और अपने बालकों या युवकों में यदि दूषित प्रवृत्ति पनप गई हो, तो उसे समाप्त करने में यह विधि या प्रयोग सर्वाधिक सहज है, इसके माध्यम से मनोवांछित कार्य सम्पन्न किये जा सकते हैं, यदि कोई कचहरी में मुकदमा चल रहा हो तो शत्रु को अपने आधीन किया जा सकता है, विपरीत पक्ष वाले वकील को भी अपने अनुकूल बनाया जा सकता है।

यह एक टेक्निक है, एक क्रिया है, एक तरीका है, जो अधिकतर प्रेक्टिकल है, और जिसे किसी योग्य सम्मोहनकर्त्ता के साथ रह कर सीखा जा सकता है, यूं तो पूज्य गुरुदेव ने प्रेक्टिकल हिप्नोटिज्म नामक ग्रन्थ कई वर्षों पूर्व लिखा था, जो आज भी बाजार में सुलभ है और जिसे अपने आपमें अद्वितीय ग्रन्थ कहा जाता है, जिसकी प्रामाणिकता असंदिग्ध है, इसे पढ़ कर के भी सैकड़ों हजारों व्यक्ति सम्मोहन विज्ञान के ज्ञाता बने, और अपने जीवन में सफलता एवं पूर्णता प्राप्त की।

पारद

पारे को पारद कहा जाता है, शास्त्रों में इसे रसराज या भगवान शिव का सत्व कहा है, यह अपने आपमें तरल पदार्थ होता है और पकड़ में नहीं आता, यदि इसको हथेली या जमीन पर रखें तो यह फैल जाता है, यह अत्यन्त मूल्यवान और दुर्लभ पदार्थ है, जो अपने आपमें महत्वपूर्ण और उपयोगी पदार्थ माना गया है।

किसी भी हालत में इस तरल पदार्थ पारद को ठोस बनाया ही नहीं जा सकता, पर कुछ विशेष जड़ी बूटियों का सहयोग दे कर एवं उच्च कोटि की रसायन विद्या के माध्यम से इसे ठोस बनाया जा सकता है, और इसको मनचाहा आकार दिया जा सकता है।

हमारे शास्त्रों में पारद को पूर्ण वशीकरण युक्त पदार्थ माना है, कहने का तात्पर्य यह है कि यदि किसी

प्रकार से पारद की अंगूठी बन जाए और कोई व्यक्ति इसे धारण कर ले, तो यह अपने आपमें अलौकिक और महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है, क्योंकि पारद को अंगूठी का आकार देना अत्यन्त कठिन है।

यह पारद से निर्मित मुद्रिका सहज सुलभ नहीं होती, बड़ी कठिनाई से इसे तैयार किया जाता है, पर हमारे शास्त्र गवाह हैं कि उच्चकोटि के राजा-महाराजा इस पारद अंगूठी को धारण करते रहे हैं, क्योंकि इस अंगूठी के प्रभाव से शरीर के रोग समाप्त होते हैं, नपुंसकता दूर होती है और व्यक्ति वीर्यवान, यौवनवान एवं पौरुषवान बनने में सफलता प्राप्त करता है।

पारद मुद्रिका

सैकड़ों हजारों साधकों के आग्रह पर हमने **पारद मुद्रिका** का निर्माण किया है, जिसे आश्चर्य के रूप में पहली-पहली बार इस **तन्त्र विशेषांक** में इसके बारे में जानकारी दी जा रही है, इस मुद्रिका को आसानी से किसी भी हाथ या किसी भी उंगली में धारण किया जा सकता है, क्योंकि यह सभी प्रकार के नाप की बनाई जा सकती है और इसे बालक, वृद्ध, स्त्री या पुरुष कोई भी पहिन सकता है, इससे कोई विपरीत प्रभाव नहीं होता और हानि नहीं होती।

पर यह वशीकरण में अत्यन्त प्रभाव युक्त एवं श्रेष्ठ मानी गई है जब पारद मुद्रिका का निर्माण हो जाता है, तब इसे विशेष मन्त्रों से मन्त्र सिद्ध किया जाता है, वशीकरण मन्त्रों से सम्पूरित बनाया जाता है, सम्मोहन मन्त्रों से सम्पुटित किया जाता है, और चैतन्य मन्त्रों से इसे सिद्ध किया जाता है।

इस प्रकार से यह मुद्रिका अपने आपमें दुर्लभ बन जाती है, जिसे कोई सौभाग्यशाली व्यक्ति ही धारण कर सकता है, मेरी राय में तो आज इस व्यस्त युग में इस प्रतिस्पर्धा के युग में प्रत्येक स्त्री या पुरुष को यह मुद्रिका धारण कर लेना चाहिए, क्योंकि इसका प्रभाव जीवन भर
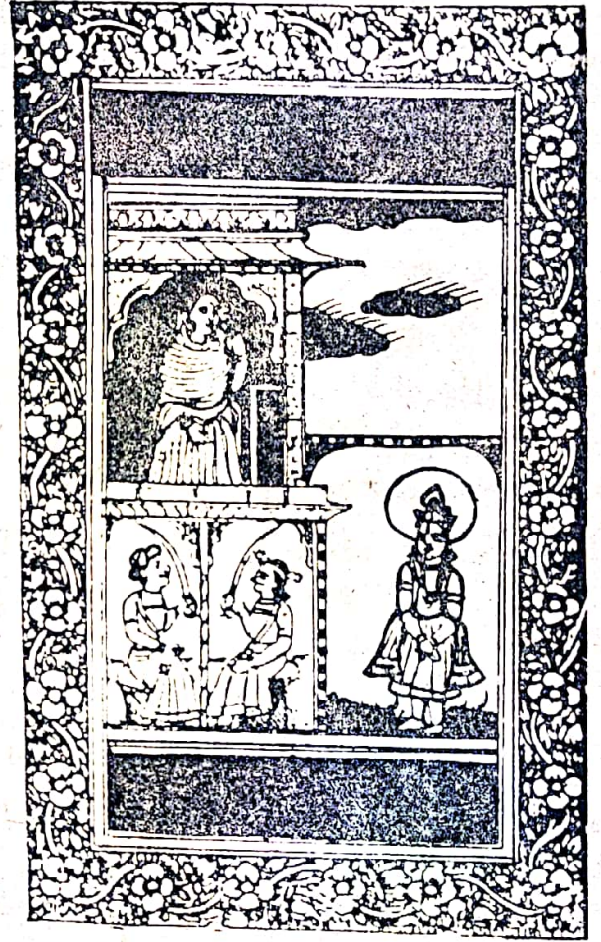
बना रहता है, यह दिखने में अत्यन्त सुन्दर और आकर्षक होती है।

जब यह मुद्रिका पहनी होती है, तो सामने वाले व्यक्ति की ज्योंही इस पर नजर पड़ती है, वह अपने आप सम्मोहित सा हो जाता है, यदि धारण करने वाला व्यक्ति मन ही मन यह कहे कि अमुक व्यक्ति या स्त्री मेरे वशीकरण प्रभाव में रहे और तब उस स्त्री या पुरुष की नजर इस मुद्रिका पर पड़ती है तो वह पुरुष या स्त्री निश्चय ही उस व्यक्ति के प्रति सम्मोहित सी हो जाती है और जिस प्रकार से वह पुरुष या पहिनने वाला बात कहता है, उसी प्रकार से वह कार्य होने लगता है।

वास्तव में ही आज के युग में यह अलौकिक तथ्य है, यह अद्वितीय मुद्रिका है, तन्त्र के क्षेत्र में सर्वोपरि वस्तु है, जिससे हमारा जीवन, सहज, सुगम, सरल और प्रभावयुक्त बन जाता है। ●

आवश्यक सूचना

सदस्यों एवं साधकों से अनुरोध है कि वी०पी० द्वारा सामग्री प्राप्त करते समय निम्न बिन्दूओं को ध्यान में अवश्य रखें—

१ सामग्री मंगवाते समय पत्र में साधना का नाम, सामग्री का नाम स्पष्ट लिखें।

२ अपना पूरा नाम, पूरा पता, सदस्यता संख्या अवश्य लिखें।

३ एक ही सामग्री को प्राप्त करने के लिए बार-बार पत्र व्यवहार न करें, हां यदि आपको सामग्री १५ दिनों तक प्राप्त न हो तो आप दुबारा पत्र व्यवहार कर सकते हैं, ताकि आपको दो बार वी०पी० न भेजी जाए।

४ बार-बार सामग्री प्राप्त करने के लिए प्राप्तकर्ता के नाम का एक ही प्रकार से उल्लेख करें।

५ सामग्री सम्बन्धी पत्र व्यवहार करते समय वी०पी०एल० नम्बर एवं दिनांक आदि का उल्लेख अवश्य करें।

६ यदि आपने सामग्री के लिए अग्रिम राशि मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजी है, तो भेजने की तारीख, स्थान एवं किस हेतु भेजी है, इसका अवश्य उल्लेख करें।

७ पोस्ट ऑफिस द्वारा भेजी गई वी०पी० पार्सल पांच दिनों तक पोस्ट ऑफिस में रुकी रहती है, अतः आप अपनी सुविधानुसार छुड़ा सकते हैं, किसी प्रकार की भूल-चूक होने पर कार्यालय को सूचित करें।

८ फौज में रहने वाले पत्रिका सदस्यों, साधकों को स्मरण कराना उचित रहेगा कि भारतीय डाक तार विभाग के नियमानुसार सेना के पते पर वी०पी० नहीं भेजी जा सकती, अतः वे सम्बन्धित सामग्री की न्यौछावर मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा कार्यालय को उपरोक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए भेज दें, ताकि उन्हें रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा सामग्री भेजने की व्यवस्था कर दी जायेगी, **(भारत से बाहर रहने वाले सदस्यों के लिए भी यही नियम लागू होगा)**।

९ यदि आप अपनी पत्रिकाएं किसी के संदर्भ में मंगवाना चाहते हैं तो उसका नाम एवं सदस्यता संख्या एवं पता स्पष्ट लिखें।

१० यदि आपका पता परिवर्तित हो गया हो तो आप कार्यालय को तुरन्त सूचित करें।

११ वी०पी० मंगाने के लिए प्रपत्र बनाने का तरीका—

प्रयोग का नाम (अगर मालुम हो तो)।
किसके लिए सामग्री मंगाया है।
वी०पी० किस नाम से भेजी जाय।
आपका यह पहला या स्मरण पत्र है।

१२ टेलीग्राम से वी०पी० मंगाते वक्त अपनी सदस्यता संख्या अवश्य भेजें।

लक्ष्य प्राप्ति, शत्रुओं पर सफलता, विजय

एवं

दरिद्रता दूर करने का दुर्लभ प्रयोग

आसुरी महाकल्प तंत्र

तन्त्र के आदि रचयिता भगवान शिव हैं, और जिसने भगवान शिव की तपस्या, भक्ति पूर्ण मनोयोग से सम्पन्न की, उसने भगवान शिव से जो मांगा वह प्राप्त हुआ, परमदेव शिव ने तांत्रिक साधनाओं के रहस्यों को अपने विशेष भक्तों के लिए बार-बार स्पष्ट किया, उनके भक्त, असुर, राक्षस, देव, मानव सभी थे।

आसुरी महाकल्प तन्त्र में सम्मोहन, वशीकरण, शत्रुनाश, मानसिक पीड़ा शान्ति, रोग शान्ति, अलक्ष्मी अर्थात् दरिद्रता दूर करने के सर्वश्रेष्ठ तन्त्र प्रयोग हैं।

शक्ति पर किसी का एकाधिकार नहीं है, जो शक्ति प्राप्त करने की इच्छा रखता है, और जो इसके लिए सही तरीके से प्रयास करता है, उसे शक्ति प्राप्त हो कर रहती है, और यदि अपने साधना तत्व को निरन्तर बनाये रखें, तथा शक्ति का सही दिशा में उपयोग करें, तो यह शक्ति तत्व निश्चित रूप से निरन्तर बना रहता है, शक्ति केवल सही रूप से चिन्तन और साधना से ही प्राप्त हो सकती है।

हमारे प्राचीन ग्रन्थों में बड़े-बड़े असुरों, राक्षसों का वर्णन आता है, जिन्होंने पूरी पृथ्वी पर अपना साम्राज्य स्थापित किया, यहां तक कि देवताओं को

भी परास्त किया, इसका कारण उनकी शिव तपस्या, शिव-भक्ति और लक्ष्य में दृढ़ता थी, उनकी साधनाओं का मूल मार्ग तन्त्र ही था।

भगवान शिव द्वारा रचित **'आसुरी महाकल्प तन्त्र'** विशेष प्रकार का तन्त्र है, जिसमें मन्त्र तन्त्र तथा यन्त्र तीनों का प्रयोग हुआ है, और इस कारण यह शीघ्र फलदायक है, **'आसुरी महाकल्प तन्त्र'** आज से हजारों वर्ष पहले जितना खरा था, उतना ही आज भी खरा एवं निश्चित सिद्धिदायक है, इसमें न तो कोई विशेष प्रकार की अप्राप्य साधना सामग्री है, और न ही जटिलता, इस साधना में साधक की इच्छा शक्ति की तीव्रता, समर्पण विशेष रूप से आवश्यक है, वैसे भी उन साधकों को तन्त्र-साधना करनी ही नहीं चाहिए जिन्हें थोड़ी बहुत शंका, अश्रद्धा हो अथवा मानसिक रूप से उद्देश्य ही गलत हो।

'तारार्णव तन्त्र' तथा **'आगम तत्व विलास'** ग्रन्थ में लिखा है कि—

किं कुर्यान्नृपतिः क्रुद्धः किं कुर्यू रिपुवोऽखिलाः।
क्रुद्धः कालोऽपि किं कुर्यादासुरी चेदुपासिता।।

अर्थात् उस साधक का क्रुद्ध नृपति क्या करेगा, सभी क्रुद्ध शत्रु भी क्या करेंगे, क्रुद्ध काल भी क्या करेगा, जिसने आसुरी महाकल्प की सिद्धि की है।

यह साधना शत्रुनाश का सबसे प्रभावशाली प्रयोग है, साथ ही इसके माध्यम से वशीकरण, सम्मोहन भी सम्पन्न किया जा सकता है, इसके अतिरिक्त रोग-शान्ति, रोग-नाश, मानसिक पीड़ा शान्ति तथा अलक्ष्मी अर्थात् दरिद्रता नाश का भी विशेष साधना कल्प है।

इस साधना के कुछ विशेष नियम हैं, जिनकी परिपालना पूर्ण रूप से आवश्यक है—

- यह साधना केवल कृष्ण पक्ष की अष्टमी से कृष्ण पक्ष की अमावस्या के बीच ही सम्पन्न की जा सकती है।
- साधक को अपना साधना उद्देश्य गुप्त रखना चाहिए, अपने गुरु के अलावा अन्य किसी को इस सम्बन्ध में जानकारी न दे।
- साधना रात्रि के प्रथम प्रहर बीत जाने के पश्चात् सम्पन्न करनी चाहिए, और यदि स्थान एकान्त

हो, तो विशेष अच्छा है, साधना के दौरान कोई भी साधना कक्ष में प्रवेश न करे।

- आसुरी महाकल्प की सभी साधनाओं में काले वस्त्रों का ही उपयोग किया जाता है।
- इस साधना में साधक अपने सामने **गुरु यन्त्र चित्र** तथा प्रयोग विशेष में आने वाली साधना सामग्री के अलावा अन्य किसी देवी-देवता का चित्र अथवा यन्त्र स्थापित नहीं करें।
- इस साधना के सभी प्रयोग अर्थात् सम्मोहन, वशीकरण, शत्रुनाश, रोगनाश, अलक्ष्मी नाश हेतु अलग-अलग संख्या में मन्त्र जप आवश्यक है, उससे अधिक संख्या में मन्त्र जप किया जा सकता है, लेकिन कम नहीं।
- प्रतिदिन मन्त्र जप की समाप्ति के पश्चात् 'होम' (हवन) अवश्य सम्पन्न करना चाहिए।
- एक बार एक उद्देश्य अर्थात् संकल्प की पूर्ति हेतु साधना सम्पन्न की जा सकती है, सभी उद्देश्यों का संकल्प एक साथ नहीं लेना चाहिए।

संकल्प

प्रत्येक दिन साधना प्रारम्भ करने से पहले साधक अपने हाथ में जल ले कर निम्न संकल्प करे—

अस्य आसुरीमन्त्रस्य अंगिरा ऋषिः विराट्छन्दः आसुरी देवता ॐ बीजं स्वाहा शक्तिः हुं कीलकं ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

साधना सामग्री

इन विशेष साधनाओं में साधना सामग्री एक समान है लेकिन अन्तिम दिन हवन अलग-अलग सामग्री से सम्पन्न किया जाता है, मूल रूप ने ताम्र पात्र में जल, **आसुरी महाकल्प महायन्त्र,** राई, सरसों, काले तिल, २१ नीम के पत्ते आवश्यक हैं, इसके अतिरिक्त सम्मोहन साधना में **आसुरी सम्मोहन गुटिका,** वशीकरण हेतु **वशीकरण गुटिका,** शत्रु शान्ति के लिए **शत्रुहन्ता गुटिका,** रोग शान्ति के लिए **मानस गुटिका,** दरिद्रता नाश हेतु **तारा गुटिका** का प्रयोग आवश्यक है।

साधना-विधान

अपने सामने एक बड़ा लकड़ी का बाजोट (चौकी) बिछा कर उस पर काला कपड़ा बिछाएं, मध्य में एक ताम्र पात्र में **आसुरी महाकल्प महायन्त्र,** स्थापित करें, उसके आगे तीन लाइनों में सात-सात नीम के पत्ते रखें, पहली लाइन में राई की सात ढेरियां बनाएं, दूसरी में तिल की और तीसरी में सरसों की ढेरियां बनाएं, एक जल पात्र अपने पास अलग रखें और एक अन्य खाली ताम्र पात्र भी रखें।

सर्वप्रथम पात्र में से जल ले कर संकल्प करने के पश्चात् पुनः बांएं हाथ में जल ले कर दांएं हाथ से सभी सामग्री पर जल छिड़कें, अपने शरीर के अंग, हृदय, सिर, नेत्र, मस्तक, उदर तथा कानों पर जल अवश्य लगाएं।

अब सर्वप्रथम गुरु का ध्यान कर अपना संकल्प दोहराएं, तथा शिव पूजन सम्पन्न करें, जिस कार्य हेतु साधना की जा रही है, उससे सम्बन्धित विशेष मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित गुटिका अपने सामने स्थापित कर उसके ऊपर काजल लगाएं, गुरु पूजन तथा शिव पूजन की अन्य सामग्री, अर्थात् कुंकुम, अबीर, गुलाल, केसर, चावल, पुष्प से सम्पन्न किया जाना चाहिए।

अब प्रत्येक ढेरी पर **आसुरी गन्ध** जिसमें राई, पुष्प, चन्दन, प्रियंगु, नागकेसर, मेनसिल, तगर, सम्मिलित होता है, और इन सब को मिला कर महीन पीसा जाता है, इस आसुरी गन्ध को इन २१ ढेरियों पर तथा **आसुरी महाकल्प यंत्र** पर चढ़ाएं और सभी सामग्री को धूप दिखाएं, अब साधक वीर मुद्रा में बैठ कर आसुरी महाकल्प मन्त्र का उच्चारण जप प्रारम्भ करें, ११० अक्षर का यह मन्त्र

अत्यन्त महत्वपूर्ण है, यदि साधक इसे याद न कर सकें, तो एक कागज पर बड़े अक्षरों में लिख कर अपने सामने रख दें, तथा इसका जप केवल **'तांत्रोक्त तारादिक माला'** से सम्पन्न करें, इस मन्त्र का पुरश्चरण दस हजार मन्त्रों का होता है, अर्थात् ८ दिन में दस हजार मन्त्र जप आवश्यक है, अपनी मन्त्र संख्या का विभाजन उसी अनुसार कर लें।

तारादिक आसुरी मन्त्र

ॐ कटुके कटुकपत्रे सुभगे आसुरि रक्ते रक्त-वाससे अथवर्णस्य दुहिते अघोरे अघोरकर्मकारिके अमुकस्य गति दहदह उपविष्टस्य गुद दहदह सुप्तस्य मनो दहदह प्रबुद्धस्य हृदय दहदह हनहन पचपच तावद्दह तावत्पच यावन्मे वशमायाति हुं फट् स्वाहा।

इस तीव्र मन्त्र का उच्चारण धीरे-धीरे और शुद्ध रूप से करना चाहिए, तथा एक माला मन्त्र जप होने के पश्चात् जिस मिट्टी के पात्र में धूप रखा हुआ है, उसमें सामने रखे हुए तिल, राई और सरसों में से थोड़ी-थोड़ी सामग्री हवन में डाल दें तथा प्रत्येक दिन के मन्त्र जप के पश्चात् सम्पूर्ण तिल, सरसों, राई हवन में समर्पित कर दें, प्रतिदिन नये नीम के पत्ते तथा नई राई, सरसों, तिल आवश्यक है, इस प्रकार आठ दिन तक निरन्तर मन्त्र जप, अनुष्ठान सम्पन्न करें, अमावस्या के दिन पूर्णाहुति सम्पन्न करनी चाहिए, उसके पहले यदि दस हजार मन्त्र जप में जितने मन्त्र कम रह गये हों, उतने मन्त्रों का जप कर लेना चाहिए।

अब इस विशेष तांत्रोक्त पूजा का अन्तिम अध्याय सम्पन्न करना है, और इस अन्तिम चरण में विधि-विधान सहित, हवन सम्पन्न किया जाता है, नित्य की तरह पहले पूजा सम्पन्न कर लें, तत्पश्चात् एक लोहे के हवन पात्र की व्यवस्था कर उसे साफ कर उस पर चारों ओर स्वस्तिक बनाकर अग्नि प्रज्वलित करें, देवी का ध्यान कर प्रार्थना

करें कि मेरी आठ दिन की यह तपस्या सफल हो, और मेरा कार्य सिद्ध हो।

आसुरी तन्त्र में अलग-अलग कार्यों के लिए अलग-अलग प्रकार की सामग्री के हवन का विधान है, सबसे पहले तो जिस मन्त्र का जप किया है, उसकी सिद्धि आवश्यक है, और इस हेतु घी और राई मिला कर एक सौ आठ बार आहुति देनी चाहिए।

इस प्रकार मन्त्र सिद्धि होने पर अन्य प्रकार के कार्यों के लिए आगे प्रयोग करना चाहिए।

शत्रु बाधा से पूर्ण शान्ति हेतु कड़वा तेल, नीम के पत्ते, तथा राई तीनों मिला कर हवन करने से प्रबल से प्रबल शत्रु का नाश हो जाता है, प्रत्येक बार मन्त्र जप उच्चारण कर हवन कुण्ड में आहुति देनी चाहिए, इस प्रकार १०८ आहुति सम्पन्न करनी चाहिए।

मुस्लिम तंत्र

जो गोली की तरह अचूक है

तन्त्र अदृश्य शक्तियों को वश में करने की प्रक्रिया है, और इस सम्बन्ध में सभी धर्मों, सम्प्रदायों में अलग-अलग मार्ग बताये गये हैं, अतः विधान का भेद हो सकता है लेकिन लक्ष्य सबका एक ही है।

मुस्लिम तन्त्र, सुलेमानी तन्त्र इन विद्याओं पर विशेष जोर देता आया है, पीर फकीर, सुलेमान, मौलवी इन विद्याओं में पारंगत माने जाते थे तथा जन जीवन की साधारण समस्याएं तन्त्र प्रयोगों द्वारा दूर की जा सकती थीं, आज भी ये प्रयोग खरे हैं, और इनका प्रभाव तत्क्षण देखने को मिल जाता है।

आधुनिक विज्ञान के अनुसार पृथ्वी की सबसे बड़ी शक्ति गुरुत्वाकर्षण शक्ति है, जिसके कारण मनुष्य पृथ्वी से बंधा है, उसकी गतिविधियों पर नियन्त्रण है, अन्यथा इस संसार में अत्यन्त विचित्र स्थिति बन जाए, तन्त्र के अनुसार प्रत्येक मनुष्य शक्ति का स्रोत है, और यह उसके मस्तिष्क तथा शरीर का आपसी सम्बन्ध तय करता है, कि इस शक्ति का उपयोग किस प्रकार किया जाय, यदि दोनों में ताल-मेल नहीं है तो शक्ति कोई काम की नहीं है, इसीलिए तो आपने देखा होगा कि शरीर बहुत हट्टा-कट्टा है लेकिन वह चार पांच सौ रुपये की नौकरी करता है, इसी तरह से मस्तिष्क से तीव्र बुद्धि वाले कई विद्वान छोटी-छोटी चीजों से डरते हैं।

आखिर ऐसा क्यों है? इसके अतिरिक्त जब तक जीव शरीर में है, तब तक तो उस पर शरीर का नियन्त्रण है, उस पर रुकावटें हैं, लेकिन जब यह शरीर

छूट जाता है, तो यह निश्चित है कि यह शक्ति समाप्त नहीं होती, और अदृश्य रूप में विचरण करती है, मुस्लिम शास्त्रों में पुनर्जन्म को मान्यता नहीं है, इनके अनुसार ये अदृश्य शक्तियां श्रेष्ठ अर्थात् सात्विक और बुरी अर्थात् असात्विक दोनों प्रकार की हो सकती हैं, और ध्यान रखें कि शक्ति कभी शान्त हो कर नहीं रह सकती, वह अपना प्रभाव डालती ही है, इस कारण जिन समस्याओं के बारे में आज का विज्ञान मौन है, वे समस्याएं प्रति दिन के जन-जीवन में आती हैं, मुस्लिम तन्त्र में इस सम्बन्ध में बहुत सारे विधान हैं, दिन प्रतिदिन की समस्याएं विभिन्न प्रकार की हो सकती हैं, इनका कोई अन्त नहीं है, कई बार घर में बच्चे बीमार पड़ते ही रहते हैं, शरीर में असमय थकान रहती है, दुकान में बिक्री नहीं बढ़ती, कुछ विचित्र प्रकार की समस्याएं बढ़ती रहती हैं, जिस दोस्त के लिए आप बहुत कुछ करते हैं वही आपको धोखा देता है, घर में चोरी हो जाती है, पति पत्नी में अनबन रहती है, प्रयत्न करने पर भी रोजगार नहीं मिलता, शारीरिक कमजोरी रहती है, शत्रुओं का भय बना रहता है, यश-सम्मान प्राप्त नहीं होता, ये सब बाधाएं क्यों आती हैं? इसका कारण तो मैंने स्पष्ट किया है, लेकिन इनका उपाय क्या है, इस सम्बन्ध में मुस्लिम तन्त्र में बहुत कुछ स्पष्ट है, नख पर काजल लगा कर 'हजरात' का प्रयोग तो हर कोई जानता है, जो चोरी, गुमशुदा व्यक्ति के बारे में पता लगाने हेतु श्रेष्ठ प्रयोग है।

मुस्लिम तन्त्र विधान

मुस्लिम तन्त्र में किसी भी प्रयोग के सम्बन्ध में अलग-अलग प्रकार की सामग्री काम में लाई जाती है, इसमें मन्त्र जप के साथ-साथ यन्त्र का विधान भी विशेष रूप से है, इस यन्त्र विधान में जिसे तावीज कहा जाता है, उसमें यन्त्र लिख कर पहना जाता है, साथ ही मन्त्र जप अनुष्ठान भी सम्पन्न किया जाता है, यन्त्र लिखने का और इसकी विशेष विधि से पूजा कर इसको सिद्ध करने का विधान बहुत अधिक कठिन एवं महत्वपूर्ण है, यदि यन्त्र जिसको लिख कर तावीज में भरना है, उसे सही रूप से न लिखा जाए अथवा सम्पूर्ण क्रिया में ध्यान न दिया जाए, तो लाभ के स्थान पर हानि हो सकती है।

यन्त्र लिखने के विशेष नियम

— यन्त्र लिखने वाला व्यक्ति इस्लामी तन्त्र का पूर्ण

जानकार होना चाहिए ।

- प्रत्येक यन्त्र के लिए अलग-अलग प्रकार की कलम का प्रयोग किया जाता है, जैसे आकर्षण हेतु जामुन की लकड़ी की कलम, स्तम्भन हेतु बरगद की लकड़ी की कलम, शुभ कार्य हेतु सोने की कलम, मित्रता सम्बन्धी कार्य हेतु अनार की कलम, इच्छा पूर्ति हेतु पीपल के जड़ की कलम, शत्रु शान्ति हेतु आक के पत्तों के रस का प्रयोग किया जाता है, इस सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी आवश्यक है ।

- यन्त्र लिखने हेतु अष्टगन्ध की स्याही बना कर लिखा जाता है, यन्त्र लिखते समय कलम का टूटना अथवा स्याही का बिखर जाना अशुभ तथा अनिष्टकारक माना गया है ।

- मन्त्र जप निश्चित संख्या में ही जपना आवश्यक है, और मन्त्र जप के समय दिशा का ध्यान रखना महत्वपूर्ण है ।

इन सब स्थितियों को देखते हुए आपको यह स्पष्ट हो जायेगा कि तन्त्र की विधियां सरल तो हैं, लेकिन यदि नियमों का पूर्ण रूप से पालन नहीं किया जाय तो लाभ के स्थान पर हानि हो जाती है, शास्त्रीय विधान में कभी भी किसी प्रकार की जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए, इसीलिए यन्त्र स्वयं न लिख कर योग्य पीर, फकीर, उलेमा आदि से लिखवाना चाहिए ।

इस्लामी तन्त्र के अनुसार मन्त्र जप व्यक्ति को स्वयं सम्पन्न करना चाहिए, किसी अन्य व्यक्ति द्वारा आपके लिए किये गये मन्त्र जप का प्रभाव बहुत ही अस्थायी रहता है।

ऊपर लिखी स्थितियों को देखते हुए, पत्रिका कार्यालय द्वारा इस सम्बन्ध में इस विद्या के जानकार श्रेष्ठ व्यक्तियों द्वारा यन्त्र लेखन का कार्य सम्पन्न कराया गया है, जिससे कि साधकों को शुद्ध यन्त्र प्राप्त हो और वे पूजा में इसका प्रयोग ला सकें, मन्त्र जप तो उन्हें करना ही है, इसके अलावा कुछ नियमों का पालन आवश्यक है ।

- पूजन के पहले शौच, स्नान इत्यादि से निवृत्त हो कर मन्त्र जप प्रारम्भ करना चाहिए ।

- प्रतिदिन निश्चित समय मन्त्र जप प्रारम्भ करना चाहिए, पूरे मन्त्र जप के समय लोवान (धूप) अवश्य जलते रहना चाहिए ।

- यन्त्र पूजन में धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प का होना आवश्यक है ।

- कूर्मासन अर्थात् घुटने मोड़कर बैठ कर मन्त्र जप करना चाहिए ।

- सभी मुसलमानी मन्त्रों का जप उलटी माला फेरते हुए जपा जाता है, यह आवश्यक है ।

आगे कुछ यन्त्र एवं उनसे सम्बन्धित मन्त्र स्पष्ट किये जा रहे हैं, इन यन्त्रों को पूरे मन्त्र जप के पश्चात् ही धारण करना चाहिए—

१- धन प्राप्ति प्रयोग

चांद रात अर्थात् अमावस्या के दिन इस **'धन प्राप्ति यन्त्र'** को अपने सामने काले कपड़े पर रखा जाता है,

ओर एक दूसरे सफेद कागज पर काली स्याही से लिखकर निम्न मन्त्र का जप करें, सामने लोबान (धूप) अवश्य जला दें, चौदहवीं रात तक प्रतिदिन मन्त्र जप करते रहें ·

५१२	२१५	२१७	३२६	४६५
५०६	७८६	९४०	५६१	७७१
७१५	३१३	९८३	७३०	२००
५१३	२३१	५००	३११	१०२

मन्त्र

विस्मिल्लाहहिर्रहमानिर्रहीम अल्लाहुम्म सल्ले-अला मुहम्मदिव अला आले मुहम्मदिव बारेक वसल्लम। या नबियो या गनियो या मलियो या वकियो ।।

२- वशीकरण प्रयोग

जिस व्यक्ति को अपने वशीभूत करना है, उसका नाम तथा उसकी मां का नाम एक सफेद कागज पर चित्र

७८६

३५२१	३५१८	३५१५
३५१६	अमुक नाम	३५२०
३५१९	३५१४	३५१७

में दिया यन्त्र बना कर लिखें, फिर लोबान जलाएं, साथ में एक चमेली के तेल का दीपक जलाएं, **वशीकरण यन्त्र** को दीपक के पास रखें, उसके आगे पांच गुलाब के फूल तथा पांच मिठाई के टुकड़ें रखें तथा निम्न मन्त्र को २१६ बार जपें तथा कागज पर लिखे यन्त्र को दीपक से जला दें।

मन्त्र

विस्मिल्लाहाहिर्रहमानिर्रहीम । अल्लाह बीच हथेली से मुहम्मद बीच कपार, उसका नाम मोहिनी मोहे जग संसार, मुझे करे मार मार, उसे मेरे बांऐं कदम तले डार, जो न माने मुहम्मद की आन, उस पर वज्र की बाण, वहवंक लाइलाही अल्ला हो मुहम्मद मेरा रसूलिल्लाह ।।
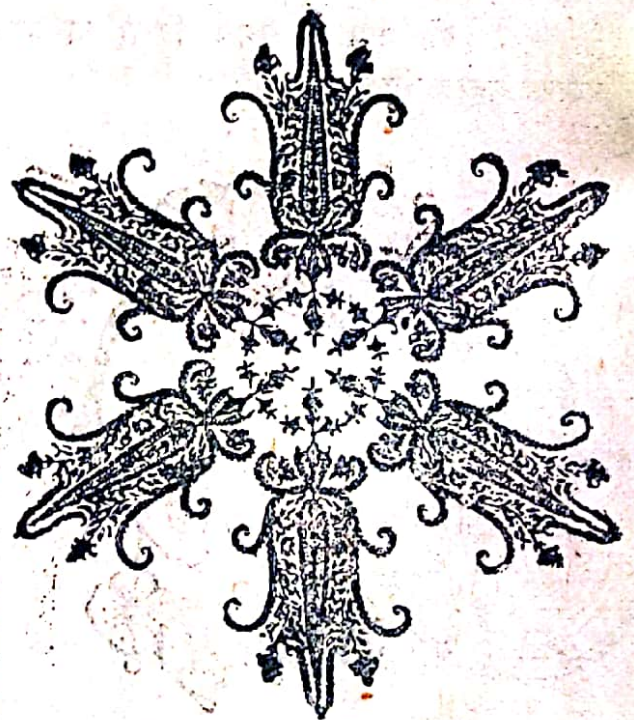
कितना भी प्रबल व्यक्ति क्यों न हो, चार शनिवार यह प्रयोग करने से वह आपकी इच्छानुसार कार्य करता है, चार शनिवार बाद यन्त्र को अपने गले में धारण कर लें।

३- रोजगार प्राप्त करने का यन्त्र

बृहस्पतिवार से यह प्रयोग करना चाहिए तथा सबसे पहले अपने सामने एक कील गाड़ कर **"रोजगारी यन्त्र"** को धागे में पिरो कर टांग दें, अब सुबह मन्त्र जप करने से पहले सवा पाव उड़द के आटे की दो रोटी बना कर अपने सामने एक सफेद रूमाल में रखें, और उन रोटियों के १०१ टुकड़े कर एक बार मन्त्र जप करें और एक टुकड़े को अलग रख दें, इस प्रकार १०१ बार मन्त्र जप करना है।

मन्त्र

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम या इस्राफिल बहक्क या
अल्ला हुम्म सल्ले अल्ला मुहम्मदिव बारेक वसल्लम ।।

जब मन्त्र जप हो जाय तो सफेद रूमाल में बांध कर इन रोटी के टुकड़ों को किसी नदी अथवा जल धारा में बहा दें, बची रोटी को वहीं पर पक्षियों को खिला दें, और घर आकर यन्त्र को उतार लें, सात दिन तक इस प्रकार प्रयोग करने के पश्चात् काले डोरे से यन्त्र को अपने गले में पहिन लें, अथवा बांह पर बांध दें।
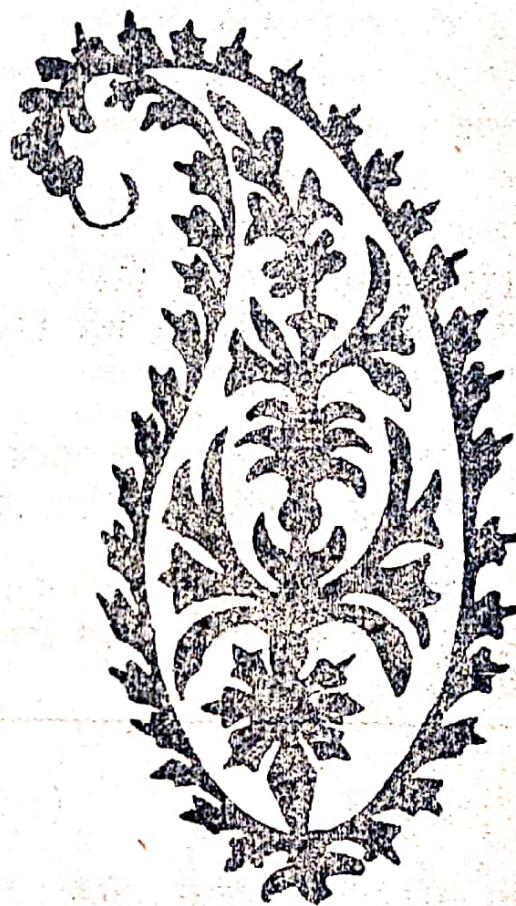
४- सर्व कार्य सिद्धि प्रयोग

यह प्रयोग किसी भी मंगलवार को प्रारम्भ कर ग्यारह दिन तक निरन्तर करना चाहिए, एक लाल कपड़े पर **"सर्व कार्य सिद्धि यन्त्र"** (तावीज) को रख कर उसके नीचे पीपल के पत्ते पर अष्टगन्ध से यह यन्त्र लिखना चाहिए, इस प्रकार कुल ग्यारह पीपल के पत्तों पर यह यन्त्र बनाना है, एक रात में एक हजार एक बार निम्न मन्त्र जप करना आवश्यक है, पूरे मन्त्र जप के समय दृष्टि यन्त्र की ओर ही रखें, ग्यारह दिन बाद कार्य किसी न किसी रूप में पूरा हो जाता है—

३	२	७	८
२	४	८	६
६	८	४	२
८	६	२	४

बिस्मिल्लाह या दरदाईल बहक्क या
दाल या दैयानो ।।

५-भय बाधा शान्ति प्रयोग

यदि किसी व्यक्ति से विशेष भय लगता हो, अथवा किसी से डर के कारण बचने का प्रयत्न करते हों, तो यह प्रयोग अवश्य सम्पन्न करना चाहिए, मन में कैसा भी भय हो, दूर हो जाता है और जिससे भय लगता है, वह मित्र बन जाता है, अपने स्वामी को अर्थात् मालिक को अनुकूल बनाने के लिए भी यह प्रयोग उचित है।

रविवार की शाम को सूर्यास्त के समय एकान्त स्थान पर अथवा घर में कमरे का दरवाजा बन्द कर यह प्रयोग करना चाहिए, अपने सामने एक लकड़ी के तख्ते पर काला कपड़ा बिछाएं, बीचोबीच काले तिल की एक ढेरी बनाएं उसके ऊपर **बिस्मिल्लाह तावीज** को रख दें, अब लोबान (धूप) जलाएं, सबसे पहले १२१ बार **'बिस्मिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम'** पढ़ें, और फिर १२१ बार नित्य **"दरुद-सरीफ"** पढ़ें—

अल्ला हुम्म सल्ले अला मुहम्मदिव अल्ला
आले ही मुहम्मदिव बारेक वसल्लम ।।

मन्त्र जप के समय तिल की ढेरी में से तिल लोबान (धूप) में होम करते रहें, इस प्रकार सात दिन तक यह प्रयोग सम्पन्न करें तो भय मुक्ति प्राप्त होती है ।

इसके अतिरिक्त इस्लामी तन्त्र में हजारों प्रकार के प्रयोग हैं जो जीवन की हर समस्या से सम्बन्धित हैं, सभी विवरण इस लेख में देना संभव नहीं है, पाठक अपनी समस्या के अनुसार पत्र लिख सकते हैं।

विशेष बात यह है कि चाहे इस्लामी तन्त्र से मन्त्र जप करें, तो भी पूर्ण श्रद्धा से मन्त्र जप करना चाहिए और तावीज को धारण करना चाहिए, किसी दूषित स्थान पर तावीज को न रखें, और सुबह अपने दोनों नेत्रों पर तावीज का स्पर्श अवश्य कराएं, छोटी-छोटी समस्याओं के निदान हेतु वास्तव में इस्लामी तन्त्र अचूक है । ●

(पृष्ठ संख्या २८ का शेष भाग)

रोग शान्ति के लिए राई, घी तथा चन्दन चूरा की आहुति पांच माला सम्पन्न करके दें, यज्ञ की राख शान्त होने पर अपने शरीर पर लगाने से सब प्रकार के रोग तथा मानसिक बाधाएं दूर भाग जाती हैं, एक स्थान पर इस विधान में यज्ञ कुण्ड के पास बड़ा जल पात्र रख कर होम कर इस जल से स्नान करने का भी विधान है, उससे दरिद्रता का भी नाश होता है ।

यदि साधक दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर नीम की लकड़ी से प्रज्वलित अग्नि में सरसों के साथ राई मिला कर मन्त्र जप करते हुए १०८ बार आहुति देता है, तो प्रबल से प्रबल शत्रु भी उसका दास हो जाता है ।

वशीकरण सम्बन्धित साधना हेतु लिखा है, कि जिसे वश में करना है, उसकी प्रतिमा राई से अपने सामने बनाएं, और उस प्रतिमा के चाकू अथवा तलवार से १०८ टुकड़े करें, फिर प्रत्येक भाग को यज्ञ में होम दें, इस प्रकार यज्ञ करने से प्रबल से प्रबल व्यक्ति भी साधक का दास हो जाता है ।

आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु पीपल की लकड़ी से हवन करें, और इस हवन में शहद तथा राई मिला कर १०८ आहुतियां अवश्य देनी चाहिए ।

संकल्प भर गुड़ तथा राई का होम करने से क्षत्रिय को तथा दही और राई का होम करने से वैश्य को, नमक और राई मिला कर होम करने से शूद्र को वश में कर सकते हैं ।

इस साधना में साधक जिस भावना से कार्य करता है, उसी के अनुसार उसे सफलता प्राप्त होती है, साधना पूर्ण होते ही हवन करते समय यन्त्र तथा गुटिका के अलावा अन्य सभी सामग्री—जिसमें साधना के लिए प्रयुक्त काला वस्त्र भी सम्मिलित है, हवन में अर्पित कर देना चाहिए ।

आसुरी महाकल्प तन्त्र प्रभावशाली तन्त्र है, और जब-जब भी इस साधना का मैंने प्रयोग किया है, तत्काल फल प्राप्त हुआ है, इसमें साधक को किसी प्रकार का संदेह नहीं रखना चाहिए । ●

निश्चित हैं तन्त्र की क्रियाएं

दत्तात्रेय तन्त्र

जो वास्तव में प्रमुख तन्त्रों का सार ही है

शिव ने अपने पुत्र दत्तात्रेय द्वारा की गई तपस्या के वरदान स्वरूप उन्हें जो तन्त्र का ज्ञान दिया, वह कालान्तर में दत्तात्रेय तन्त्र के नाम से विख्यात हुआ, वास्तव में यह शिव दत्तात्रेय संवाद है, मूल ग्रन्थ में ६५१ श्लोक हैं और प्रत्येक श्लोक एक-एक तन्त्र को स्पष्ट करता है।

जैसी कि कहावत है— **प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण क्या, हाथ कंगन को आरसी क्या ?** उसी प्रकार दत्तात्रेय तन्त्र को परखा जा सकता है, प्रत्येक प्रयोग को प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सकता है।

आदि ग्रन्थ वेदों की रचना का उद्देश्य मनुष्य को परमात्मा परम ब्रह्म तत्व से साक्षात्कार कराना और मनुष्य के जीवन में हर समय सात्विक तत्व जाग्रत करना था जिसमें ऋषियों, मुनियों ने अपना ज्ञान, अपना अनुभव भी सम्मिलित किया, ये ऋषि मुनि आदर के योग्य हैं, जो वास्तविक रूप में जीवन में उस स्थिति को प्राप्त कर चुके थे, जिसमें सांसारिक तत्वों से लगाव समाप्त हो जाता है, लेकिन वास्तव में जीवन तो बहुत ही ऊबड़-खाबड़ एवं कष्टप्रद मार्ग की भांति है, उसे तो भली भांति पार करना ही है, अन्यथा जीवन की क्या सार्थकता है ? इसी कारण तन्त्र विधान की रचना हुई क्योंकि तन्त्र में जीवन की समस्याओं, बाधाओं से मुक्ति पाने का विधान था, मूल ग्रन्थों में जिस रूप में प्रयोग दिये गये हैं, उसी रूप में सम्पन्न करने से ही अनुकूलता प्राप्त होती है, मूल

ग्रन्थ आज बहुत कम व्यक्तियों के पास हैं और उनमें से अधिकतर तन्त्र विद्या के दुष्प्रयोग के डर से इन ग्रन्थों को समाज के सामने प्रस्तुत नहीं कर रहे हैं।

बंगाल के महान तांत्रिक नीलमणि मुखर्जी बाबू से हमें दत्तात्रेय तन्त्र का एक ग्रन्थ प्राप्त हुआ है, और यह ग्रन्थ कम से कम ६०० से ८०० वर्ष पुराना प्रतीत होता है, यह ग्रन्थ उन्हें अपनी गुरु-शिष्य परम्परा के अन्तर्गत प्राप्त हुआ तथा संस्कृत और बंगला भाषा में हस्तलिखित है इसमें तन्त्र के सभी प्रकार के प्रयोगों जिसमें भूत-प्रेत सिद्धि, आकर्षण, रसायन विद्या, बुद्धि-वृद्धि, आयु वृद्धि, निधि दर्शन, संतान उत्पत्ति, यक्षिणी साधना, बाधा हरण प्रयोग, कामना पूर्ति प्रयोग, स्तम्भन, मोहन, वशीकरण, विष बाधा निवारण, गर्भ स्तम्भन, मारण प्रयोग के अतिरिक्त रति क्रियाओं से सम्बन्धित प्रयोग भी सम्मिलित हैं, वास्तव में यह तन्त्र का सम्पूर्ण ग्रन्थ कहा जा सकता है।

इन सभी प्रयोगों में विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का, वनस्पतियों का, यन्त्रों का प्रयोग किया गया है, साथ ही मन्त्र सिद्धि पर भी विशेष जोर दिया गया है, अतः साधक को पूर्ण विधि से ही प्रयोग करना चाहिए, कुछ प्रयोगों में विशेष सावधानी रखनी आवश्यक है, जैसे मारण प्रयोग, व्यक्ति को तभी सम्पन्न करना चाहिए जब उसके स्वयं के प्राणों पर संकट आ जाए, साथ ही वशीकरण प्रयोग भी अपने श्रेष्ठ कार्य की सिद्धि हेतु करना चाहिए, तथा उच्चाटन प्रयोग उस पर करना चाहिए जिस शत्रु ने पुत्र हानि, धन हानि, पहुंचाई हो अथवा गृह और भूमि छीन ली हो, यक्षिणी साधना में लिखा है कि इस साधना से प्राप्त धन को श्रेष्ठ कार्यों में ही लगाना चाहिए, बुरे कार्यों में साधना एवं सिद्धि से प्राप्त धन का दुरुपयोग करने से सिद्धि और बुद्धि दोनों नष्ट हो जाती हैं।

तन्त्र साधना के सम्बन्ध में अपने प्रयोगों को जानकारी किसी को भी नहीं देनी चाहिए, कब प्रयोग कर रहे हैं, क्या प्रयोग कर रहे हैं तथा क्यों कर रहे हैं, इसकी जानकारी अपने निकटस्थ से निकटस्थ को भी नहीं देनी चाहिए अर्थात् प्रयोगों को गुप्त से गुप्त रखना चाहिए, और भक्तिहीन, आस्थाहीन व्यक्ति को इस विद्या का ज्ञान दान नहीं करना चाहिए।

साधना विधान

दत्तात्रेय तन्त्र साधना मूल रूप से शिव साधना है और साधक कितना ही प्रयोग करे, जब तक शिव कृपा नहीं होगी तब तक उसे प्रयोगों में सफलता नहीं मिल सकती, अतः दत्तात्रेय तन्त्र साधना के अन्तर्गत किये जाने वाले सभी प्रयोगों में साधक को सर्वप्रथम शशि शेखर शिव पूजा अवश्य सम्पन्न करनी आवश्यक है, सभी प्रयोगों में मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त शिव सिद्धि दत्तात्रेय महायन्त्र स्थापित करना आवश्यक है, यह यन्त्र तांत्रोक्त विधि से अभिमन्त्रित तथा उत्कीलित किया हुआ होता है, इस कारण साधक को अपने प्रयोगों में न्यास तथा उत्कीलन प्रयोग नहीं सम्पन्न करना पड़ता।

सबसे पहले शुद्ध वस्त्र धारण कर पूजा स्थान में **शिव चित्र** लगाएं तत्पश्चात् अपने सामने एक पात्र में इस **शिव सिद्धि दत्तात्रेय महायन्त्र** को स्थापित कर दें, इस महायन्त्र को जल स्नान, दुग्ध स्नान तथा पंचामृत स्नान सम्पन्न कराकर साफ कपड़े से पोंछ कर दूसरे पात्र में स्थापित कर इस पर चन्दन, केसर, बिल्व पत्र, भांग, धतूरा इत्यादि अर्पित करें, फिर अपने हाथ में जल ले कर निम्न संकल्प पढ़ें—

संकल्प

ॐ अस्य श्री दत्तात्रेय तन्त्र मन्त्रस्य मम् (अपना नाम, गोत्र) अभीष्ट कार्य सिद्ध्यर्थे शशिशेखर देवः अनुष्टुप् छन्दः ह्रीं बीज स्वाहा शक्ति प्राप्ति मन्त्र सिद्धि अहं करिष्ये ॥

अब एक माला शिव मन्त्र "ह्रीं ॐ नमः शिवाय ह्रीं" का जप कर मूल साधना प्रारम्भ करें।

दत्तात्रेय तन्त्र के अन्तर्गत आने वाली सभी साधनाओं मे ऊपर लिखा पूजन तो सम्पन्न करना ही है, किन्तु प्रत्येक साधना के लिए अलग-अलग शिव सिद्धि दत्तात्रेय-महायन्त्र **स्थापित करना आवश्यक नहीं है।**

दत्तात्रेय त्रिलोह पवित्री

दत्तात्रेय तन्त्र विधान के अन्तर्गत साधक को अलग-अलग कार्यों हेतु अलग-अलग **त्रिलोह पवित्री** धारण है, और उस विशेष मुहूर्त में इसको दत्तात्रेय मन्त्रों से अभिमन्त्रित किया जाता है, दत्तात्रेय तन्त्र में लिखा है—

त्रिलोहस्य पवित्री ज्ञातव्या च धारितं सर्वकर्मणि।
सर्वं सिद्धिप्रदा महाबलो महातेजो जायते न संशयम्॥

अर्थात् जो साधक दत्तात्रेय तन्त्र सिद्ध त्रिलोह पवित्री अपने हाथ में धारण कर लेता है, वह सब प्रकार के कार्यों में सिद्धि प्राप्त कर महाबल तथा महातेज प्राप्त करने में समर्थ रहता है।

त्रिलोह पवित्री का निर्माण और उसे अभिमन्त्रित

करना आवश्यक है, त्रिलोह पवित्री का निर्माण एक विशेष प्रक्रिया द्वारा विशेष मुहूर्त में ही किया जाता है, यह अष्टधातु का बना एक छल्ला होता है, जिसमें प्रत्येक धातु का अंश निश्चित रूप में होना आवश्यक है, इसका निर्माण केवल शुक्ल पक्ष में पड़ने वाले रविवार युक्त पुष्य नक्षत्र अथवा गुरुवार युक्त पुष्य नक्षत्र को ही किया जाता करना एक जटिल प्रक्रिया है, सर्वप्रथम इसे **रुद्र तन्त्र** प्रयोग से, फिर मंगलवार को **दत्तात्रेय तन्त्र कल्प मन्त्रों** से, बुधवार को **राधा तन्त्र** प्रयोग से, गुरुवार को **धारा तन्त्र** प्रयोग से, शुक्रवार को **सुर सुन्दरी तन्त्र** से तथा शनिवार को **काली चण्डीश्वरी तन्त्र** प्रयोग से सिद्ध किया जाता है, प्रत्येक कार्य पूर्ण विधि-विधान सहित होना

आवश्यक है तभी यह त्रिलोह पवित्री पूर्ण फलदायक रहती है।

पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में तन्त्र विशेषज्ञों द्वारा कुछ विशेष त्रिलोह पवित्री मुद्रिकाएं तैयार की गई हैं, इसमें प्रत्येक प्रयोग अर्थात् आकर्षण, उच्चाटन, वशीकरण, स्तम्भन, मोहन, निधि-दर्शन, विवाद-विजय, भूतादि बाधा निवारण, हेतु अलग-अलग त्रिलोह पवित्री है, एक कार्य के लिए प्रयुक्त त्रिलोह पवित्री का प्रयोग दूसरे कार्य हेतु नहीं करना चाहिए।

पूजा विधान के अन्तर्गत जो पूजा लिखी है, वह पूजन पूर्ण कर साधक अपने हाथ में विशेष त्रिलोह पवित्री धारण कर मन्त्र जप कार्य सम्पन्न करे, प्रत्येक कार्य के लिए अलग-अलग मन्त्र, मन्त्र संख्या निश्चित है, नीचे इसका विवरण स्पष्ट किया जा रहा है—

१- आकर्षण प्रयोग

दिन : सोमवार

सामग्री : आकर्षण त्रिलोह पवित्री

मन्त्र : ।। ॐ नमो आदिपुरुषाय अमुकस्या-कर्षणं कुरु कुरु स्वाहा ।।

जप संख्या : सात माला

२- मोहिनी प्रयोग

दिन : शुक्रवार

सामग्री : मोहिनी त्रिलोह पवित्री

मन्त्र : ।। ॐ नमो महायक्षिण्यै मम अमुक मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ।।

जप संख्या : ग्यारह माला

३- ग्रह पीड़ा नाश प्रयोग

दिन : रविवार

सामग्री : अमुक ग्रह त्रिलोह पवित्री

मन्त्र : ।। ॐ नमो भास्कराय अमुकस्य सर्वग्रहाणां पीड़ानाशनं कुरु कुरु स्वाहा ।।

जप संख्या : एक माला

४- स्तम्भन प्रयोग

दिन : मंगलवार

सामग्री : स्तम्भन त्रिलोह पवित्री

मन्त्र : ।। ॐ नमो भगवते महाबल पराक्रमाय मम शत्रुणां बुद्धि बलं बन्धय बन्धय दृष्टि स्तम्भय स्तम्भय पातय पातय महीतले हुं फट् स्वाहा ।।

जप संख्या : सात माला

५- उच्चाटन प्रयोग

दिन : मंगलवार

सामग्री : उच्चाटन त्रिलोह पवित्री

मन्त्र : ।। ॐ नमो भगवते रुद्राय करालाय अमुकं पुत्र बान्धवैस्सह शीघ्रमु-च्चाटय उच्चाटय स्वाहा ठः ठः ठः ।।

जप संख्या : ग्यारह माला

६- विवाद विजय प्रयोग

दिन : शनिवार

सामग्री : जया त्रिलोह पवित्री

मन्त्र : ।। ॐ नमो विश्व रूपाय अमुकस्य अमुकेन सह विजयं कुरु कुरु स्वाहा।।

जप संख्या : एक माला

७- भूत-प्रेत बाधा निवारण प्रयोग

दिन : रविवार

सामग्री : नृसिंह त्रिलोह पवित्री

(शेष भाग पृष्ठ संख्या ४६ पर देखें)

दारिद्रय संहत्री पाप खण्डिनी विद्या

लक्ष्मी का श्रेष्ठतम तांत्रोक्त स्वरूप

धनदा रतिप्रिया लक्ष्मी यक्षिणी

जो कि

अति शीघ्र सफलतादायक

तथा

तीव्र प्रभावशाली साधना है

जिसके माध्यम से लक्ष्मी वश में होती ही है

सही रूप से, शुद्ध रूप से यदि लक्ष्मी की साधना की जाय तो ऐसा कोई कारण नहीं कि लक्ष्मी प्रसन्न न हो, और साधक को फल प्राप्ति न हो, क्योंकि लक्ष्मी का निवास गृहस्थों के यहां ही है, तन्त्र का ज्ञान हर व्यक्ति को नहीं होता और जिनको थोड़ा बहुत ज्ञान होता भी है, तो वे सही रूप से प्रक्रिया नहीं अपनाते. तांत्रिक साधनाओं में सबसे बड़ा कार्य तो दृढ़ निश्चय और पूर्ण विश्वास के साथ कार्य करना है, कि "मैं यह प्राप्त करके ही रहूंगा", जब यह भाव मन में रहे, साधना विधि का पूरा ज्ञान हो, गुरु का निर्देश हो, उनका आशीर्वाद हो, तो मनुष्य तो क्या देवताओं को भी ऐसे साधक के वश में होना पड़ता है।

दार्शनिक लोग कहते हैं, कि इस संसार की गति और माया विचित्र ही है और यह केवल लक्ष्मी अर्थात् धन के बल-बूते पर चलती है, इसीलिए लक्ष्मी उपासना पर सदैव विशेष महत्व दिया गया है, इस विशेष स्थिति में क्या ऐसी कोई प्रक्रिया अर्थात् तन्त्र संभव है जिसके द्वारा व्यक्ति लक्ष्मी अपने वश में कर संसार के गति चक्र

में गोते नहीं खाये, अपितु संसार की इस गति के साथ स्वयं गतिमान होकर चले, और यदि लक्ष्मी आपके साथ है और इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहे, तो निश्चित समझिये कि आपमें बल भी है, बुद्धि भी है, ज्ञान भी है, क्योंकि धन बिना न तो बुद्धि का मोल है न ज्ञान का महत्व और न बल का उपयोग।

तन्त्र और लक्ष्मी

लक्ष्मी की प्राप्ति हेतु सब धर्मों में और यहां तक कि हमारे अपने हिन्दू धर्म में भी कहा गया है कि जीवन का अर्थ भगवान का जप करना है, घर छोड़ कर संन्यासी बन जाओ, यह सब संसार माया जाल है, किन्तु हिन्दू धर्म में ही लक्ष्मी के सम्बन्ध में जितने ग्रन्थ लिखे गये हैं, उतने किसी अन्य विषय पर नहीं लिखे गये, यहां तक कि हमारे यहां भारत में तो पत्नी को लक्ष्मी कहा जाता है, और जब घर में कन्या होती है तो कहा जाता है कि लक्ष्मी का आगमन हुआ है, फिर आप विचार कीजिये कि यह विरोधाभास कैसा है?

वास्तव में सत्य यह है कि विरोध गलत रूप से उत्पन्न किया गया है, और इस विरोध के पीछे कोई ठोस आधार नहीं है, क्योंकि हमारे यहां तो विष्णु की पूजा लक्ष्मी के साथ की जाती है, शंकर की पूजा पार्वती के साथ, राम की पूजा सीता के साथ, कृष्ण की पूजा राधा के साथ, और लक्ष्मी, राधा, पार्वती, सीता- ये सब लक्ष्मी के ही स्वरूप हैं, यह सबसे श्रेष्ठतम तत्व है, क्या लक्ष्मी के इन स्वरूपों के बिना भगवान की कल्पना की जा सकती है? क्या कोई पार्वती, लक्ष्मी, सीता और राधा का तिरस्कार कर भगवान की कृपा प्राप्त कर सकता है? अतः वास्तविक अर्थों में तो लक्ष्मी की साधना करना भगवान की साधना करने के समान ही फलप्रद है।

पूज्य गुरुदेव के नाम जो पत्र आते हैं, उनमें अधिकांश पत्रों में आर्थिक समस्याओं का विवरण मिलता है, किसी का व्यापार नहीं चल रहा है, तो किसी के ऊपर कर्ज है, किसी के घर चोरी हो गई है, तो कोई जन्म से ही निर्धन है, कोई सामान्य नौकरी वाला है और धन की कमी के कारण लड़कियों का विवाह नहीं कर पा रहा है, किसी ने अपना रुपया उधार दे दिया है और वह वापस नहीं मिल रहा है, तो कोई नया कार्य शुरु करना चाहता है लेकिन पैसा नहीं है, तात्पर्य यह है कि मूल समस्या धन की अर्थात् लक्ष्मी कृपा की ही है।

तन्त्र और लक्ष्मी आपस में पूर्ण रूप से जुड़े हैं, लक्ष्मी प्राप्ति के लिए जिस प्रकार निरन्तर क्रियाशील रहना आवश्यक है उसी अनुरूप तन्त्र तो क्रियात्मक ज्ञान है, तन्त्र में शक्ति है कि वह लक्ष्मी को अपने वश में कर ले।

लक्ष्मी का सर्वश्रेष्ठ तांत्रिक स्वरूप है **धनदा रति प्रिया यक्षिणी**, और इस स्वरूप को तन्त्र प्रक्रिया द्वारा जाग्रत किया जा सकता है।

और जब पाठकों को ज्ञात हुआ कि इस बार **तन्त्र विशेषांक** प्रकाशित हो रहा है, तो हजारों पत्र आये कि लक्ष्मी के सम्बन्ध में ऐसी विशेष तन्त्र साधनाओं के बारे में ज्ञान पूज्य गुरुदेव द्वारा अवश्य प्रकट किया जाय, जिन साधनाओं को करने से सफलता निश्चित रूप से प्राप्त हो।

आज से हजारों-हजारों वर्ष पहले यही प्रश्न पार्वती ने भगवान शिव से पूछा था कि, "हे भगवन्! कलियुग में जब मनुष्य को आचार-विचार का ज्ञान नहीं होगा, उसका जीवन विशेष प्रकार के बन्धनों से जकड़ा होगा, धन केवल कुछ लोगों के पास एकत्र होगा, अधिकतर लोग धन की कमी से परेशान होंगे, तो क्या आप के तन्त्र में ऐसा कोई विधान नहीं है, जिससे दरिद्रता का सम्पूर्ण रूप से नाश हो जाय?" तब भगवान शिव ने हंसते हुए कहा कि, "हे देवी! तुम जानती हो, फिर भी मेरे ही मुख से सुनना चाहती हो, तो दरिद्रय विनाशक कल्प को सुनो, इस कल्प की

रचना मैंने की थी, मेरे कहने पर इसे कुबेर को बताया गया और कुबेर धन के अधिपति तथा देवताओं के कोषाध्यक्ष बन गये, यह विद्या **दारिद्रय संहत्री यक्षिणी पाप खंडिनी विद्या** है।"

या श्रुत्वा याति रंकोऽपि भूपालत्वं न संशयः।
विद्याधरत्वमाप्नोति किं पुनर्बहुभाषितैं।।
यदिर्लक्षेश्वरत्वं च तद्भक्तो देवि सर्वदा।
वर्षेणापि स्मरन्मन्त्रं भवेद्बहुधनो नरः।।
नो संस्पृशति दारिद्रय ताक्ष्यं भोगकुलं यथा।।

अर्थात्, शिव ने कहा कि यह विद्या ऐसी है, जिसे जानकर रंक अर्थात् दरिद्र से दरिद्र व्यक्ति भी राजा जैसा धनपति बन जाता है इसमें कोई संदेह नहीं, और जो एक वर्ष तक इस विद्या के मन्त्र का जप करता रहता है, तो पूर्ण रूप से सम्पन्न हो जाता है, जिस प्रकार सांप गरूड़ से भागते हैं, उसका स्पर्श भी नहीं करते, उसी प्रकार इस तन्त्र विद्या के जानकार का दरिद्रता स्पर्श ही नहीं करती।

धनदा रतिप्रिया यक्षिणी तन्त्र साधना

दारिद्रय संहत्री यक्षिणी पाप खंडिनी विद्या के अन्तर्गत धनदा रतिप्रिया यक्षिणी साधना साधक को सम्पन्न करनी चाहिए, यह देवी लक्ष्मी का सर्वोत्तम और एकमात्र स्वरूप है जिसमें तान्त्रिक विधान द्वारा सिद्धि प्राप्त की जा सकती है।

इस साधना में सबसे विशेष बात यह है कि लक्ष्मी के जितने स्वरूप होते हैं, उन सभी स्वरूपों का आह्वान तथा विशेष पूजा की जाती है, प्राण प्रतिष्ठा प्रक्रिया सम्पन्न की जाती है, साधना के पहले दशों दिशाओं का कीलन किया जाता है जिससे किसी प्रकार की बाहरी बाधा से विघ्न न पड़े और जो सकल्प साधक करे, उसका फल तत्काल अवश्य ही प्राप्त हो।

इस महान तान्त्रोक्त साधना में प्राण प्रतिष्ठा आवश्यक है, यह विषय अत्यन्त गुह्यतम रहा है, प्राण प्रतिष्ठा से ही शक्तियां चैतन्य होती हैं।

रुद्रयामल तन्त्र में स्पष्ट लिखा है कि यदि इस प्रकार पूर्ण विधान से यह तन्त्र साधना सम्पन्न की जाय, तो कोई कारण नहीं कि देवी तत्काल आकर साधक के मनोरथों को पूर्ण न करे।

इस साधना में मूल विधान तो एक है, परन्तु आगे प्रत्येक आर्थिक समस्या के सम्बन्ध में अलग-अलग मन्त्र जप हैं।

विशेष आवश्यक

तन्त्र साधना में कुछ सावधानियां रखनी आवश्यक होती हैं और जिस प्रकार गुरु का निर्देश हो उसी प्रकार साधना सम्पन्न करनी चाहिए :—

- जो समस्या आपके लिए वर्तमान में सबसे अधिक महत्वपूर्ण हो, उसके निवारण का संकल्प लेकर साधना करनी चाहिए।

- मूल साधना प्रारम्भ करने से पहले कुबेर पूजन अवश्य सम्पन्न करना चाहिए।

- साधक लाल रंग के वस्त्र धारण करें, और साधक का मुंह उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए।

- लक्ष्मी साधनाओं के लिए शुभ मुहूर्त देख कर कार्य करना चाहिए, मुहूर्त के अभाव में किसी भी बुधवार को साधना प्रारम्भ की जा सकती है।

- वस्त्र कपास के बने हों, अर्थात् सूती वस्त्र ही धारण करें।

- साधना में चन्दन का विशेष उपयोग है, अतः पहले से ही काफी मात्रा में घिसकर चन्दन अपने पास रख लेना चाहिए।

- धनदा रतिप्रिया यक्षिणी को केवल खीर का भोग लगाया जाता है।

- यक्षिणी के सभी स्वरूपों में ३६ लक्ष्मी स्वरूप भी हैं, उन सब की पूजा एवं ध्यान अवश्य करना चाहिए।

साधना सामग्री

इस विशेष तांत्रोक्त साधना में तांत्रोक्त मन्त्रों से प्राण प्रतिष्ठित **धनदा रतिप्रिया यक्षिणी यन्त्र** की स्थापना की जाती है, इसके साथ लक्ष्मी के ३६ स्वरूपों हेतु **३६ तांत्रोक्त लक्ष्मी फल** जो कि दारिद्रय संहत्री पाप खंडिनी विद्या के बीज मन्त्रों से सिद्ध लक्ष्मी तांत्रोक्त फल हैं, जिनके बिना यह साधना अपूर्ण है, तथा मन्त्र जप के लिए **तांत्रोक्त यक्षिणी माला** आवश्यक है, इस माला का प्रयोग केवल लक्ष्मी से सम्बन्धित तांत्रोक्त साधनाओं में ही किया जाना चाहिए।

तांत्रोक्त विधान

साधना प्रारम्भ करने की पूर्व रात्रि को १०८ बार निम्न शिव मन्त्र का जप करें—

ॐ नमो जाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने।
वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः॥
स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वं कार्येष्वशेषतः।
क्रियासिद्धि विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर॥

तत्पश्चात् भूमि पर शैया बिछाकर शयन करें, इससे शुभ स्वप्न आते हैं और साधना की आज्ञा स्वप्न में ही प्राप्त होती है।

प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठ कर शुद्ध गर्म जल से स्नान करें और लाल सूती वस्त्र धारण कर सीधे अपने पूजा स्थान पर चले जांय, साधना की सभी सामग्री की व्यवस्था पहले से कर लें, जिससे कि कोई व्यवधान उपस्थित न हो, सबसे पहले अपने ललाट पर चन्दन का तिलक लगायें, लाल आसन पर बैठें, और सामने **गुरु यन्त्र, चित्र** (यन्त्र न हो तो गुरु चित्र) से गुरु पूजन सम्पन्न करें, तत्पश्चात् मानसिक रूप से गुरु आज्ञा एवं आशीर्वाद से आगे की साधना में रत हों, साधना स्थल में पूर्ण शुद्धता होनी आवश्यक है।

अब साधक सबसे पहले कुबेर पूजन सम्पन्न करें, अपने सामने कुबेर यन्त्र स्थापित कर उसका चन्दन से पूजन कर एक माला निम्न कुबेर मन्त्र का जप करें—

कुबेर मन्त्र

॥ ॐ यक्षाय कुबेराय धनधान्याधिपतये धन-धान्यसमृद्धि मे देहि दापय स्वाहा॥

तत्पश्चात् सर्वप्रथम एक थाली में "ॐ ह्रीं सर्व-शक्ति कमलासनाय नमः" लिखें और उस पर पुष्प की पंखुड़ियां रखें, तत्पश्चात् इस पर **धनदा रतिप्रिया**

यक्षिणी यन्त्र स्थापित कर चन्दन लेपन करें और सुगन्धित पुष्प अर्पित कर संकल्प विनियोग सम्पन्न करें।

विनियोग में अपने हाथ में जल ले कर निम्न विनियोग मन्त्र पढ़ कर जल भूमि पर छोड़ दें—

विनियोग

ॐ अस्य श्रीधनदेश्वरीमन्त्रस्य कुबेर ऋषिः पंक्तिश्छन्दः श्रीधनदेश्वरी देवता धं बीजं स्वाहा शक्तिः श्रीं कीलकं श्रीधनदेश्वरीप्रसादसिद्धये समस्तदारिद्रयनाशाय श्रीधनदेश्वरीमन्त्रजपे विनियोगः ॥

प्राण प्रतिष्ठा प्रयोग

प्राण प्रतिष्ठा के द्वारा जीव स्थापना की जाती है और साक्षात् यक्षिणी का आह्वान किया जाता है, इसमें अपने चारों ओर जल छिड़कें तथा निम्न मन्त्रों द्वारा आह्वान करें—

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं श्रीधनदेश्वरीयन्त्रस्य प्राणा इह प्राणाः।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं श्रीधनदेश्वरीयन्त्रस्य जीव इह स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं श्रीधनदेश्वरीयन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं श्रीधनदेश्वरीयन्त्रस्य वाङ्मनस्त्वक्चक्षुश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥

श्रीधनदेश्वरी इहागच्छेहतिष्ठ ॥

यह प्राण प्रतिष्ठा प्रयोग साधना का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है, यह अपनी साधना में प्राण तत्व भरने की प्रक्रिया है।

अब धनदा रतिप्रिया यक्षिणी लक्ष्मी के ३६ स्वरूपों की पूजा कर उनका आह्वान किया जाता है, प्रत्येक स्वरूप का आह्वान कर **'एक तांत्रोक्त लक्ष्मी फल'** स्थापित करें, धनदा यक्षिणी के ३६ स्वरूपों पर चन्दन चढ़ाएं, प्रत्येक तांत्रोक्त लक्ष्मी फल के आगे एक-एक दीपक जलाएं तथा पुष्प की एक-एक पंखुड़ी रखें, आह्वान क्रम निम्न प्रकार से है—

ॐ धनदायै नमः	ॐ मंगलायै नमः
ॐ दुर्गायै नमः	ॐ त्रिनेत्रायै नमः
ॐ चंचलायै नमः	ॐ त्वरितायै नमः
ॐ मंजुघोषायै नमः	ॐ सुगन्धायै नमः
ॐ पद्मायै नमः	ॐ वाराह्यै नमः
ॐ महामायै नमः	ॐ कराल भैरव्यै नमः
ॐ सुन्दर्यै नमः	ॐ सरस्वत्यै नमः
ॐ रुद्राण्यै नमः	ॐ चामर्यै नमः
ॐ वज्रायै नमः	ॐ हरिप्रियायै नमः
ॐ कमलायै नमः	ॐ वरदायै नमः
ॐ अभयदायै नमः	ॐ सुपट्टिकायै नमः
ॐ उमायै नमः	ॐ महालक्ष्म्यै नमः
ॐ कामदायै नमः	ॐ क्षुधायै नमः
ॐ महाबलायै नमः	ॐ धनुर्धरायै नमः
ॐ कामप्रियायै नमः	ॐ गुह्येश्वर्यै नमः
ॐ चपलायै नमः	ॐ लीलायै नमः
ॐ सर्वशक्त्यै नमः	ॐ भ्रामर्यै नमः
ॐ सर्वेश्वर्यै नमः	ॐ माहेश्वर्यै नमः

इस प्रकार पूजन कर साधक यक्षिणी का ध्यान करे, तथा **यक्षिणी यन्त्र व चित्र** के सामने खीर का भोग लगाये, इसके अतिरिक्त घी, मधु तथा शर्करा (शक्कर) का भोग लगाये।

कुछ ग्रन्थों में लिखा है कि **धनदा रतिप्रिया यन्त्र** के नीचे साधक अपना चित्र रखे, अथवा अष्टगन्ध से कागज पर अपना नाम लिख कर अवश्य रखे।

अब साधक धनदा रतिप्रिया यक्षिणी का वीर मुद्रा में बैठ कर मन्त्र जप तान्त्रोक्त यक्षिणी माला से प्रारम्भ

करे और मन्त्र जप पूरा हो जाने के पश्चात् ही अपने स्थान से उठे।

मन्त्र

।। ॐ रं श्रीं ह्लीं धं धनदे रतिप्रिये स्वाहा ।।

यह धनदा साधना का मूल मन्त्र है, तथा प्रतिदिन १००८ मन्त्रों का जप करना आवश्यक है, सम्पूर्ण प्रयोग ग्यारह दिन का है, और जब साधक की साधना चलती है तो उसे बहुत ही सुन्दर अनुभव प्राप्त होते हैं।

प्रतिदिन साधक मन्त्र जप कर सामग्री को उसी स्थान पर रखे तथा दूसरे दिन अपना पूजन मन्त्र जप कार्य सम्पन्न करे, ग्यारह दिन तक सामग्री को अपने स्थान मे इधर-उधर नहीं करना है, प्रतिदिन पूजन के पश्चात् लक्ष्मी आरती अवश्य सम्पन्न करे।

इस महाविद्या के सम्बन्ध में लिखा है कि—

पूजान्ते च समायाति रात्रौ देवी धनेश्वरी।
सर्वालंकारमुत्सृज्य दत्वा यति निजालये ।।
धनं चविपुलं दत्वा साधकस्य मनोरथान् ।।

अर्थात् पूजा के समापन के समय धनदेश्वरी देवी अवश्य आती है और अपने विशेष स्वरूप द्वारा साधक को विपुल धन दे कर उसके मनोरथों को पूर्ण करती है, जो नित्य प्रति धनदा रतिप्रिया यक्षिणी का पूजन एवं मन्त्र जप करता है, उसकी दरिद्रता तो उसी प्रकार नष्ट हो जाती है, जैसे कपूर अग्नि में जल कर भस्म हो जाता है।

भगवान शिव का कथन है कि मेरी प्रिय धनदा रति-प्रिया यक्षिणी साधना का न तो अंगन्यास है, न करन्यास, न छन्द है, न ऋषि और न देवता, यदि कुबेर का मत न भी हो तो भी इसकी पूजा साधना करने से पूर्ण फल अवश्य प्राप्त होता है।

कुछ अन्य प्रयोग

धनदा रतिप्रिया यक्षिणी साधना में अलग-अलग कार्यों हेतु अलग-अलग मूल मन्त्र का जप किया जाता है, कुछ विशेष मन्त्र प्रस्तुत हैं—

१- आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु

।। ॐ ह्लीं श्रीं मां देहि धनदे रतिप्रिये स्वाहा ।।

२- ऋण मोचन हेतु

।। ॐ ह्लीं ॐ मां ऋणस्य मोचय मोचय स्वाहा ।।

३- व्यापार एवं कार्य वृद्धि हेतु

।। ॐ धं श्रीं ह्लीं रतिप्रिये स्वाहा ।।

विशेष

रुद्रयामल तन्त्र में लिखा है कि धनदा रतिप्रिया यक्षिणी के साथ कामदेव की पूजा करने से देवी अत्यन्त प्रसन्न होती है, और साधक के सांसारिक जीवन के सभी मनोरथों को पूरा करती है, श्रेष्ठ पति की प्राप्ति हेतु कामदेव की विधि-विधान पूजा सहित धनदा रतिप्रिया देवी की साधना सम्पन्न करनी चाहिए, शारीरिक दोषों दुर्बलताओं के नाश हेतु भी दोनों की सम्मिलित पूजा साधना का विधान है, संयुक्त पूजा से साधक स्वयं कामदेव के समान हो जाता है।

लक्ष्मी तन्त्र की यह साधना सर्वोत्तम साधना है और आज जब हम ग्रन्थों में प्राचीन भारत की सुसम्पन्नता, वैभव और श्रेष्ठता के बारे में पढ़ते हैं तो आश्चर्य लगता है लेकिन यह पूर्ण सत्य है और इसका कारण उस समय के लोगों द्वारा किया जाने वाला आचार-विचार, साधनाओं के प्रति आस्था, तांत्रिक ज्ञान ही प्रमुख मूल कारण रहा है, जैसे-जैसे धर्म को अर्थात् इन प्राचीन विद्याओं के बारे में लोग भूलते गये वैसे-वैसे दरिद्रता का आगमन होता रहा, अतः आवश्यकता है कि इस विशेष ज्ञान को समझें और स्वयं प्रत्यक्ष क्रियाएं सम्पन्न कर अपने जीवन को स्वर्णिम आभा से मंडित करें। ●

॥ अथ श्री काली तंत्रम् ॥

काली कंकाली मेरा वचन न जाए खाली

शव पर आरुढ़, गले में मुण्ड-माला धारण किये हुए, हाथ में खड्ग, वर मुद्रा, कटा हुआ मुण्ड, श्मशान निवासनी महाकाली का स्वरूप तो सबसे निराला है, और जिस साधक ने काली की साधना नहीं की, वह तन्त्र में पूर्णता प्राप्त कर ही नहीं सकता, काली तो तन्त्र की आधार शक्ति है।
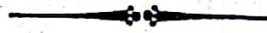
शत्रुओं का मर्दन करने वाली, भक्तों को अभय प्रदान करने वाली, जिसके अट्टहास से तीनों लोक गूंज उठते हैं, जिसकी तपस्या देवता भी करते हैं, जिसके बिना शिव भी शक्तिहीन हैं, उस महाकाली को मैं शत-शत नमन करता हूं।

महाकाली की साधना केवल तांत्रोक्त रूप से ही सम्पन्न की जा सकती है, और जो साधक विधि-विधान सहित काली साधना सम्पन्न करता है, वह अपने जीवन में भय, बाधा, और शत्रुओं का नाश कर देता है, महाकाली का अभय व वर प्राप्त साधक तो स्वयं काल के समान हो जाता है, तथा निर्विघ्न अपनी जीवन यात्रा में सम्पूर्णता के साथ विचरण करता है।

काली साधना के सम्बन्ध में तांत्रिक विधान की पुस्तकों की भरमार है, कहीं श्मशान में पूजा करने का विधान है, तो कहीं विशेष बलि देने का विधान है, कई पुस्तकों में शव पर बैठ कर अनुष्ठान का वर्णन है, तो कहीं नग्न हो कर नग्न स्त्री के साथ भोग करते हुए विशेष तांत्रिक क्रिया का विधान है, और तो और बिल्ली, भेंड़, ऊंट, भैंसे तक की बलि का वर्णन आया है, यदि कोई इन पुस्तकों के आधार पर तांत्रिक क्रियाएं सम्पन्न करे तो या तो वह पागल हो जायेगा, अथवा लोग उसे पागल घोषित कर देंगे, तांत्रिक साधनाएं मूल रूप से तो अत्यन्त सरल हैं, इसे तो पंडितों, पुरोहितों ने अपने स्वार्थवश तोड़-मरोड़ दिया है, जिससे सामान्य साधक भयभीत रहें, आज आपके सामने एक अत्यन्त सरल काली तन्त्र विधान दिया जा रहा है, जिसे आप अपने घर में, अपने पूजा स्थान में बैठ कर सम्पन्न कर सकते हैं, जब काली को 'मां' कहा गया है, तो उस मां के आशीर्वाद की प्राप्ति तो पूर्ण निष्ठापूर्वक भक्ति करने वाले साधक को अवश्य प्राप्त होगी, उसके लिए गन्दी प्रक्रियाएं सम्पन्न करने की आवश्यकता ही नहीं है, पुत्र की पुकार सुन कर मां को तो आना ही है।

काली तन्त्र विधान

अमावस्या की रात्रि के अलावा रविवार मां काली की साधना करने के लिए श्रेष्ठ मुहूर्त है, इस दिन रात्रि

को साधक स्नान कर शुद्ध लाल वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान में दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठें और अपने सामने स्वर्ण अथवा ताम्र धातु से निर्मित **महाकाली यन्त्र** को सबसे पहले दूध से स्नान कराएं, फिर शुद्ध जल धारा से, तत्पश्चात् एक ताम्र पात्र में पुष्प रख कर निम्न मन्त्र से देवी का ध्यान करते हुए, पूजा कार्य प्रारम्भ करें—

" ॐ ह्रीं कालिका योग पीठात्मने नमः "

इस साधना में आठ दिशाओं में आठ भैरव तथा आठ भैरवियों की स्थापना करें, इस हेतु **तांत्रोक्त आठ भैरव चक्र, आठ भैरवी चक्र** की स्थापना करें, ये अष्ट भैरव व भैरवियां हैं :—

अष्ट भैरव –असितांग भैरव, रूरू भैरव, चण्ड भैरव क्रोध भैरव, उन्मत्त भैरव, कपालि भैरव, भीषण भैरव, संहार भैरव ।

अष्ट भैरवी–श्री भैरवी, महा भैरवी, सिंह भैरवी, धूम्र भैरवी, भीम भैरवी, उन्मत्त भैरवी, वशीकरण भैरवी, मोहन भैरवी ।

इन सब की पूजा सिंदूर, अबीर-गुलाल तथा लाल पुष्पों से करें, प्रत्येक के आगे एक-एक फल नैवेद्य के रूप में रखें, धूप और दीप निरन्तर जलता रहे, अब महाकाली मूर्ति यन्त्र के आगे साधक नैवेद्य रख कर देवी का ध्यान करें कि —

ॐ अभीष्टसिद्धि मे देहो शरणागत वत्सले ।
भक्तया समर्पये तुभ्यं इह सम्पूर्णपूजनम् ।

अर्थात्, "हे महादेवी ! मैं तेरा भक्त तेरी शरण में हूं, मुझे सिद्धि प्रदान करो और यह सम्पूर्ण पूजन तुम्हें समर्पित है ।" अब साधक पुष्पों की एक माला देवी पर चढ़ाएं तथा शान्त मुद्रा में बैठ कर मन्त्र जप प्रारम्भ करें।

मन्त्र

।। ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके
क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा ।।

उसी स्थान पर बैठ कर पांच माला मन्त्र जप सम्पन्न करना है, बीच में किसी प्रकार का व्यवधान नहीं होना चाहिए, इस प्रकार पूजन कर देवी की आरती सम्पन्न करें, और अर्पित किया हुआ नैवेद्य ग्रहण करें ।

यह साधना अत्यन्त सिद्ध साधना है और घोर से घोर संकट भी महाकाली की साधना से निश्चित रूप में दूर हो जाता है, साधक की मनोकामनाएं अवश्य ही पूर्ण होती हैं । ●

(पृष्ठ संख्या ३८ का शेष भाग)

मन्त्र : ॐ नमो नृसिंहाय हिरण्य कश्यप-वक्ष-स्थल-विदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी कुलोन्मूलनाय स्तम्भोद्भवाय समस्तदोषान् हर-हर विसर-विसर पच-पच हन-हन कम्पय-कम्पय मथ-मथ ह्रीं ह्रीं फट् फट् ठः ठः एह्येहि रुद्र आज्ञापयति स्वाहा ।

ऊपर लिखे प्रयोगों के अतिरिक्त भी अन्य प्रयोग सम्पन्न किये जा सकते हैं, प्रत्येक प्रयोग के लिए मन्त्र तथा जप संख्या अलग-अलग है और अलग-अलग दत्तात्रेय त्रिलोह पवित्री धारण करना आवश्यक है ।

स्थानाभाव के कारण सभी प्रकार के प्रयोगों का विवरण देना संभव नहीं है, अतः पाठकगण अपनी समस्याओं के अनुसार पत्र लिख कर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं ।

दत्तात्रेय तन्त्र तो एक प्रकार से सभी तन्त्रों का सार स्वरूप ही है, इसका प्रत्यक्ष अनुभव तो साधक इन तन्त्र साधनाओं को सम्पन्न कर स्वयं अनुभव कर सकते हैं । ●

तन्त्र विशेषांक–सामग्री परिशिष्ट

साधना में पूर्ण सिद्धि हेतु,

मन्त्र उर्जा है, तन्त्र प्रक्रिया है, तो यन्त्र साधन है, उपकरण है जिसके बिना न तो मन्त्र प्रभावशाली और न ही तन्त्र, मन्त्र तन्त्र और यन्त्र तीनों एक दूसरे के पूरक हैं, अतः मन्त्र और तन्त्र के भली-भांति ज्ञान हेतु भी आवश्यक है कि साधना हेतु जो उपकरण (सामग्री) प्रयुक्त की जाए वह पूर्ण रूप से प्रामाणिक एवं चैतन्य हो।

अपने पत्रिका पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधनाओं से सम्बन्धित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्रियों को भी उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है।

विशेष उल्लेखनीय बात तो यह है कि साधना के निमित्त सभी सामग्री शुद्ध, चैतन्य एवं प्राण प्रतिष्ठित करवा कर ही साधकों को उपलब्ध कराई जाती है।

प्रस्तुत अंक में जो भी साधनाएं प्रकाशित की गयी हैं उनसे सम्बन्धित सामग्रियों का विवरण निम्नवत् है, आपको जो भी साधनाएं सम्पन्न करनी हों उनसे सम्बन्धित सामग्रियों का विवरण लिखकर पत्र द्वारा हमें सूचित कर दें, हम आपको वह सामग्री डाक व्यय सहित वी०पी० द्वारा भिजवा देंगे, जिससे यह सामग्री आपको सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

साधना प्रयोग	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्यौछावर
वसन्त पंचमी पर्व	५	पारिजातेश्वरी ब्रह्मशक्ति कंकण	२४०)रु०
		सरस्वती यन्त्र	६०)रु०
तांत्रोक्त गुरु साधना	१३	तांत्रोक्त गुरु यन्त्र	२१०)रु०
		गुरु चित्र	२०)रु०
		षटचक्र कुण्डलिनी जागरण यन्त्र	१२०)रु०
श्री ललिताम्वा सिद्धि	१७	ललिताम्बा महायन्त्र	१२०)रु०
		हकीक माला	११०)रु०
तन्त्र से तीव्र वशीकरण	१६	हकीक माला	११०)रु०
सौन्दर्य की दुनियां में तन्त्र चमत्कार	२०	सौन्दर्य गुटिका	१४५)रु०
		सिद्ध स्फटिक माला	८०)रु०
पारद मुद्रिका	२१	पारद मुद्रिका	१५०)रु०

साधना प्रयोग	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्यौछावर
आसुरी महाकल्प	२५	गुरु यन्त्र-चित्र	२१०)रु०
		आसुरी महाकल्प महायन्त्र	१०५)रु०
		आसुरी सम्मोहन गुटिका	६०)रु०
		वशीकरण गुटिका	६०)रु०
		शत्रुहन्ता गुटिका	६०)रु०
		तारा गुटिका	८०)रु०
		आसुरी गन्ध	२०)रु०
		तांत्रोक्त तारादिक माला	१४०)रु०
मुस्लिम तन्त्र—	२६	—	—
१-धन प्राप्ति प्रयोग	३१	धन प्राप्ति यन्त्र	६०)रु०
२-वशीकरण प्रयोग	३२	वशीकरण यन्त्र	६०)रु०
३-रोजगार प्राप्त करने का प्रयोग	३३	रोजगारी यन्त्र	६०)रु०
४-सर्वकार्य सिद्धि प्रयोग	३३	सर्वकार्य सिद्धि यन्त्र	८०)रु०
५-भय बाधा शान्ति प्रयोग	३३	बिस्मिल्लाह तावीज	६०)रु०
दत्तात्रेय तन्त्र	३५	शिव चित्र	२०)रु०
		शिव सिद्धि दत्तात्रेय महायन्त्र	१२०)रु०
१-आकर्षण प्रयोग	३८	आकर्षण त्रिलोह पवित्री	८०)रु०
२-मोहिनी प्रयोग		मोहिनी ,, ,,	,, ,,
३-ग्रह पीड़ा नाश प्रयोग		(अमुक) ग्रह ,, ,,	,, ,,
४-स्तम्भन प्रयोग		स्तम्भन ,, ,,	,, ,,
५-उच्चाटन प्रयोग		उच्चाटन ,, ,,	,, ,,
६-विवाद विजय प्रयोग		जया ,, ,,	,, ,,
७-भूत-प्रेत बाधा निवारण		नृसिंह ,, ,,	,, ,,
धनदा रतिप्रिया लक्ष्मी यक्षिणी साधना	३९	धनदा रतिप्रिया लक्ष्मी यक्षिणी साधना पैकेट-	३६०)रु०
तांत्रोक्त काली साधना	४५	काली यन्त्र	२४०)रु०
		तांत्रोक्त आठ भैरव चक्र	६०)रु०
		तांत्रोक्त आठ भैरवी चक्र	६०)रु०

इस दिन "सरस्वती जयन्ती" भी है, अतः अष्टगन्ध से बालकों, बालिकाओं एवं साधकों की जीभ पर विशेष तरीके से एवं प्रयोग के साथ **सरस्वती यन्त्र अंकित प्रयोग** सम्पन्न होगा, जिससे कि वे परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकें, उनका दिमाग एवं स्मरण शक्ति बढ़ सके, तथा साधनाओं में पूर्ण सफलता अनुभव कर सकें।

आपको चाहिए कि अपने सभी बालकों के साथ इस समारोह में एकत्र हों।

अप्सरा प्रयोग सिद्धि

१४ फरवरी को "अप्सरा प्रयोग सिद्धि दिवस" है, जो कि अपने आपमें महत्वपूर्ण दिवस है, एक विशेष यन्त्र के साथ इस दिन गुरुधाम में विशेष मन्त्र का अनुष्ठान सम्पन्न किया जाय, तो निश्चय ही अप्सरा से सम्बन्धित सिद्धि प्राप्त हो सकती है।

इस दिन जो इस साधना के इच्छुक हों उनको चाहिए कि वे गुरुधाम में यह प्रयोग सम्पन्न कर सफलता प्राप्त करें।

विजय प्रयोग

२८ फरवरी को "विजय प्रयोग दिवस" है, जो जीवन में बाधाएं आ रही हैं, उन बाधाओं के समापन के लिए यह प्रयोग महत्वपूर्ण है, जो कि गुरुधाम में सम्पन्न कराया जायेगा।

आपको चाहिए कि आप इस प्रयोग को अवश्य ही सम्पन्न कर सफलता अर्जित करें।

ये सारे प्रयोग सायंकाल ४ बजे से ७ बजे के बीच सम्पन्न होंगे।

शिवरात्रि

२ मार्च ९२ को महाशिवरात्रि दिवस है, साधकों को चाहिए कि वे इस दिन व्रत रखें और रात में पूरी रात्रि भर गुरुधाम में रह कर भगवान शिव की उपासना, साधना एवं प्रयोग सम्पन्न करें।

वास्तव में ही यह अपने आपमें महत्वपूर्ण उत्सव है, और ज्यादा से ज्यादा साधकों को इस रात्रि का प्रयोग गुरुधाम में करना चाहिए।

इस सम्बन्ध में आप विशेष जानकारी के लिए उपरोक्त टेलीफोन नम्बर पर टेलीफोन कर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। ●

आजीवन सदस्य बनकर निःशुल्क पत्रिका प्राप्त कीजिये

साथ में एक बहुमूल्य उपहार भी पाइये

- मात्र एक बार आजीवन सदस्यता शुल्क [illegible] भेजकर जीवनभर बिना कुछ भेजे निरन्तर पत्रिका प्राप्त करते रहिये।
- बड़ी और महत्वपूर्ण बात यह है कि धनराशि धरोहर के रूप में सुरक्षित है।
- नोटिस देकर यह धरोहर धनराशि [illegible] पूरी की पूरी वापस प्राप्त की जा सकती है।
- धनराशि मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से भेजें। ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो, पर मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान के नाम में बना हो।

आजीवन सदस्यों के लिये एक मुफ्त उपहार

मंत्रसिद्ध, प्राणप्रतिष्ठयुक्त, चैतन्य ऊर्जातप से संचरित

आजीवन सदस्यता शुल्क-२४००) रु०
(चौबीस सौ रुपये)

नवरत्न-मुद्रिका

असली प्रामाणिक व दुर्लभ नवरत्नों से जड़ी आपके पहनने योग्य अंगूठी

1. माणिक्य, 2. मोती, 3. मूंगा, 4. पन्ना, 5. पुखराज, 6. हीरा, 7. नीलम, 8. गोमेद, 9. लहसुनिया

नवरत्नों से जड़ी यह जगमगाती मुद्रिका जो आपकी उंगली में जीवनभर के लिये आने को मचल रही है। आजीवन सदस्य बनकर न केवल जीवनभर मुफ्त पत्रिका प्राप्त करें बल्कि साथ में इस सर्वकामनापूर्ण नवरत्न मुद्रिका के भी स्वामी बनें।

परम पूज्य गुरुदेव
डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

सम्पर्क सूत्र
मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान
डा. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी,
जोधपुर-342001 (राज.) फोन - 32209